।। श्री गणेशाय नमः।।

ॐ श्री कल्कि जगतपते पदमापति रमापते नमः।।

।। ॐ परमात्मा श्री कल्कि सदा सहाय ।।

१. कल्कि सहस्त्रनाम अगस्त्य मुनि द्वारा लिखित अनुपम ग्रंथ ''अगस्त्य संहिता'' से प्राप्त हुआ है।

२. अगस्त्य मुनि श्री विष्णु के अवतारों के प्रवक्ता आचार्य थे।

३. भगवान श्री राम के राज्य अभिषेक में अगस्त्य मुनि सम्मिलित हुए थे।

४. श्री अगस्त्य मुनि के प्रस्ताव पर ही श्री राम ने ८ अश्वमेघ यज्ञ किये थे।

५. स्वर्गीय आचार्य श्री प्रभाकर मिश्र, जिन्हें उनके जीवन काल में शंकराचार्य की पदवी से सम्मानित किया गया था, जब वह दरभंगा विश्वविद्यालय के कुलपति थे, उन्हें स्वप्न अनुभव में बार-बार एक पुस्तक खोजने के निर्देश मिले।

६. जब आचार्य श्री प्रभाकर मिश्र ने स्वप्न अनुभव में मिले निर्देशों पर काम किया तो उन्हें वहाँ की लाईब्रेरी में ''अगस्त्य संहिता'' मिली जिसमें कल्कि भगवान के हजार नाम लिखे हुए थे।

७. यज्ञ की महत्ता :

१. शास्त्र, पुराणों एवं धर्म ग्रंथों में यज्ञ की सर्वाधिक महत्ता बताई गई है।

२. हवन करने से एक अपूर्व रश्मि बनती है जिससे मनुष्य तेजवान होता है।

३. हवन की आहूतियों से देवी-देवताओं को भक्ष्य मिलता है।

४. हवन में जो मन्त्र बोले जाते हैं और जिनकी आहूतियाँ दी जाती हैं वह उस देवी-देवता तक सीधी पहुँच जाती है।

८. यज्ञ के माध्यम से व्यक्ति का दैवीय शक्तियों से सीधा तारतम्य स्थापित हो जाता है।

९. जब से सृष्टि का निर्माण हुआ है, सृष्टि के विकास के लिये यज्ञ हवन किये गए हैं।

१०. सृष्टि को विनाश से बचाने के लिये स्वयं ब्रह्माजी ने बनारस के दशाश्वमेघ घाट पर दस अश्वमेघ यज्ञ किये थे।

११. राजा बलि ने १०१ अश्वमेघ यज्ञ का संकल्प किया था, यदि यह संकल्प पूरा हो जाता तो वे स्वतः ही इन्द्र की गद्दी के अधिकारी हो जाते, इसलिये भगवान विष्णु ने उनका १०१वाँ यज्ञ रोकने के लिये वामन अवतार लिया।

१२. जाप व कीर्तन से कई गुणा फल हवन का है।

१३. हवन में डाली गई आहूतियाँ देवी-देवताओं को तुरन्त शक्ति प्रदान करती हैं।

१४. त्रेता युग में राजा दशरथ ने यज्ञ के द्वारा ही अग्नि देवता से वह खीर प्राप्त की जिसके फल स्वरूप उन्हें भगवान राम पुत्र रूप में प्राप्त हुए।

१५. दक्ष प्रजापति ने भी सृष्टि पर अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिये महान यज्ञ का आयोजन किया था।

१६. राजा द्रुपद ने द्रोण से अपना प्रतिशोध लेने के लिये यज्ञ द्वारा पुत्र और पुत्री प्राप्त किये।

१७. रामायण में बताया गया है कि त्रेता युग से श्रेष्ठ ऋषि-मुनि सर्वाधिक यज्ञों का आयोजन किया करते थे जिससे उन्हें दिव्य शक्तियों की प्राप्ति होती थी।

१८. यज्ञ के द्वारा कोई भी मनोवांछित वस्तु तुरन्त प्राप्त की जा सकती है।

१९. श्री कल्कि वचनामृत (अश्रुत अमृतवाणी) ८३ पृष्ठ पर गुरु जी ने लिखा है- (कल्कि भगवान की सुहावनी..... लीला चल रही है) धर्म के बैरियों का नाश हो रहा है। बड़े-बड़े अजगर हवन कुण्ड में स्वाहा होने के लिए खिंचे चले आ रहे हैं।

२०. त्रेता युग में राक्षस सबसे ज्यादा ऋषियों के यज्ञ से घबराते थे।

२१. चक्रवर्ती सामर्थ्यवान राजाओं ने हमेशा अपने पुण्यों में वृद्धि करने हेतू और अपनी शक्ति प्रदर्शन के लिये बड़े-बड़े यज्ञों का आयोजन किया है।

२२. महाराजा युधिष्ठिर द्वारा किये गए राजसूय यज्ञ के बारे में हम सभी जानते हैं।

२३. आज कल्कि भगवान की अनूठी आलौकिक लीला ने स्वप्न अनुभव द्वारा कल्कि भक्तों को विशेष सुख-समृद्धि देने के लिये हवन का रास्ता बताया है। यह हमारे कल्कि भगवान की महान कृपा का फल है कि वे साधारण भक्त के द्वारा साधारण विधि से किये गए यज्ञ को अपनी अनुमति और समस्त देवी-देवताओं की सहमति प्रदान कर बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों द्वारा किये गये यज्ञों का फल प्रदान किया है।

२४. स्वप्न अनुभव द्वारा कल्कि भगवान ने यज्ञ हवन के विशेष फल की बार-बार मोहर लगाई है।

२५. यज्ञ हवन द्वारा कल्कि भगवान की लीला का बहुत तेजी से विस्तार हो रहा है इसके प्रमाणित तथ्य भक्तों को स्वप्न अनुभव द्वारा प्राप्त हुए हैं।

क) कल्कि भगवान का हवन निर्विघ्न सम्पूर्ण करने के लिये कल्कि भक्तों को दैवीय शक्तियों द्वारा सुरक्षा कमांडोस प्रदान होते हैं।

ख) आहूतियों द्वारा शक्ति प्राप्त कर देवी-देवता आशीर्वाद देते हैं।

ग) हवन के द्वारा पुण्यों का बैंक बैलेंस बढ़ता है।

घ) हवन के द्वारा पापों का तेजी से भुगतान पूरा होता है।

ङ) सहस्त्रनाम की गूंज से कलियुग का सिंहासन जोर-जोर से कांपता है।

च) दो कुण्डीय यज्ञ की पूरी विधि स्वप्न अनुभव में आई।

छ) संभल में सहस्त्रनाम यज्ञ स्वप्न अनुभव लीला द्वारा ही शुरू कराया गया।

ज) गंगा महारानी और यमुना महारानी के तट पर सहस्त्रनाम यज्ञ कल्कि जी की लीला ने ही शुरू कराया।

२६. जिन देवी देवताओं नाम का हवन होता है वह देवता प्रसन्न होकर उस व्यक्ति की परेशानी दूर करते हैं व उसके भाग्य का उदय करते है। व्यक्ति की आयु बढ़ती है।

२७. हवन द्वारा ही प्रदूषित जल शुद्ध होकर वर्षा के द्वारा हमें मिलता है। पृथ्वी

माता हमें भोजन के लिए विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ देती है। देश और काल में सुधार होता है।

बगलामुखी माँ और कल्कि जी

भगवान श्री कल्कि ने अपने भक्तों को कलियुगी, दुराचारी, अघोरी, तांत्रिक, आसुरी म्लेच्छ शक्तियों के कठोर प्रहारों से बचाने के लिये माँ बगलामुखी (पीताम्बरधारी महाविष्णु की प्रचण्ड महाशक्ति माँ पीताम्बरा) को सक्रिय किया है। अपने भक्तों को विभिन्न तरह से माँ बगला की कृपा और उनके कमान्डोस (सुरक्षा प्रहरियों) द्वारा विशेष सुरक्षा प्राप्त करने के आसान तरीके बताए हैं।

विशेष : (ज्ञानी पंडितों और विद्वानों का तो कहना है कि माँ बगला की आराधना पूजा करने के बहुत कठोर नियम हैं। उनके हिसाब से साधारण गृहस्थ के लिये तो बगलामुखी माता के बीज मंत्र का एक बार जाप करना भी वर्जित है। उनके हिसाब से यदि विधि पूर्वक इसकी पूजा न की जाए तो इसके दुष्परिणाम भी हो सकते हैं।)

वास्तव में कल्कि भक्त तो बगलामुखी माता के बारे में जानते भी नहीं थे। पर कल्कि भक्तों को स्वप्नानुभवों द्वारा बगलामुखी माँ के निमित्त उपचार करने, उनके बीज मंत्र के हवन और जाप करने के निर्देश मिले। कलियुग और राक्षसी शक्तियों के बढ़ते प्रकोप से अपने भक्तों को बचाने के लिये ही भक्तवत्सल्य भगवान श्री कल्कि ने अपनी अनुमति के साथ माँ बगला की सहमति अपने भक्तों को दिलवाई। साधारण भक्त कर्मकांडी पूजा के कठोर विधानों का पालन नहीं कर सकता। अपने भक्तों की इस मजबूरी को समझकर भगवान श्री कल्कि ने दो कुण्डीय यज्ञ का विधान स्वयं मामाजी को स्वप्नानुभव में दिखाया।

स्वप्नानुभव

मुझे दिखा आकाश मार्ग से दो हवन कुण्ड उतर कर नीचे की तरफ आ रहे हैं। मानो स्वयं कल्कि जी ने भक्तों के लिये यह हवन कुण्ड भेजे हैं। फिर एक वाणी सुनाई पड़ती है कि पहले हवन कुण्ड में माँ बगलामुखी के बीज मंत्र की

एक माला का हवन करना है। वाणी अनुभव द्वारा बगलामुखी का बीज मंत्र – *ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्व दुष्टानाम् वाचम् मुखम् पदम् स्तंभय जिह्वाम् कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ पश्चात स्वाहा स्वाहा* सुनाई पड़ा। फिर संकेत किया गया कि दूसरे हवन कुण्ड में कल्कि जी के मंत्रों से हवन होगा। अद्‌भुत हैं हमारे चमत्कारी श्री कल्कि भगवान जिन्होंने अपने भक्तों को अघोरी, तांत्रिक, षड्‌यंत्रकारी दुष्ट शक्तियों से बचने का रास्ता सुझाया है। जिस प्रकार एक बच्चे के जन्म के पश्चात लगभग ५ वर्ष तक एक नियमित अंतराल पर बच्चे को विभिन्न बीमारियों से बचने के टीके लगाए जाते हैं चाहे उसे बीमारी है या नहीं। उसी प्रकार आज कलि के इस युग में जब हम कलि की क्रूरता का आकलन किये बिना भगवान श्री कल्कि को प्रगट करने की पुकार करते हैं तो ऐसे में कैसे भगवान श्री कल्कि ने अंतर्जगत से भगवान विष्णु की संहारिणी शक्ति माँ बगला का सुरक्षा कवच हमें दो कुण्डीय यज्ञ के द्वारा दिलवाया है जिससे कलियुग के कठोर प्रहारों से हमारी रक्षा हो और राक्षसी शक्तियाँ हम पर कोई अनिष्टकारी प्रहार न कर पाए। हम कोटि-कोटि आभारी हैं माँ पीताम्बरा (माँ बगला) और

भगवान श्री कल्कि के जो माता पिता की तरह अपने भक्तों का जो उनके प्राकट्य प्रचार का कार्य कर रहे हैं उनको सुरक्षा कवच एवं विशेष सुरक्षा प्रदान कर रहे हैं।
नोट : कल्कि भक्तों को व्यक्तिगत रुप से भी अलग-अलग रूप से भी स्वप्नानुभव आए जिसमें उन्हें यह निर्देश मिला है कि उन्हें बगलामुखी माँ के बीज मंत्र का जाप करना है अथवा हवन करना है। उनमें से कई भक्तों के साथ में तो ऐसा भी हुआ जिन्होंने माँ बगलामुखी माँ के बीज मंत्र का पता भी नहीं था उन्हें वह सुनाई पड़ा। और जब उन्होंने अनुभव पैनल मैम्बर से बात की तो यह तो बगलामुखी माँ का बीज मंत्र है और उन्हें यह निर्देश मिला है कि उन्हें इसका हवन व जाप करना चाहिए। जब उस भक्त ने उस मंत्र का जाप व हवन किया तो उसे सच में लगा कि माँ बगला ने उसे बहुत बड़ी परेशानी से बचा दिया है।

हवन करने की विधि

दो हवन कुण्ड तैयार करेंगे। दोनों हवन कुण्ड में थोड़ी-थोड़ी हवन सामग्री डालकर बीच में रुई की गोल बत्ती घी में भिगोकर रख लें। अब उसमें

थोड़ा सा कपूर का चूरा बुरक लें, जल की तीन कटोरी लें। दोनों हवन कुण्ड के साथ एक-एक जल की कटोरी रखें और एक कटोरी आसन के पास रखें। पहले हवन कुण्ड में माँ बगलामुखी के मंत्र से हवन करने के लिये सर्व प्रथम जल की कटोरी घी पात्र (बर्तन) के पास रखकर हवन कुण्ड की अग्नि (माचिस से) प्रज्वलित करते हैं ।

१. चावल का दाना हवन कुण्ड में डालते हुए कहे- ॐ अग्नये नमः अग्नि आवहायामि
२. चावल का दाना हवन कुण्ड में डालते हुए कहे- सम् पुज्यामि
३. बताशा का टुकड़ा हवन कुण्ड में डालते हुए कहे- गणपत्यादि देवताभ्यो नमः
४. दो बूंद जल हवन कुण्ड के बाहर छिडकते हुए कहे - पावकाग्नये नमः

शुरु की आठ आहूतियाँ (नीचे दी गई) स्वाहा तक बोलते हुए हवन की अग्नि में डालें। घी की एक एक बूँद दांए रखी कटोरी के पानी में टपकाएं।

१. ॐ भूः स्वाहा, इदम् अग्नये न मम
२. ॐ भुवः स्वाहा, इदम् वाहवे न मम
३. ॐ स्वः स्वाहा, इदम् सूर्याय न मम

४. ॐ अग्नये स्वाहा, इदम् अग्नये न मम

५. ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदम् इन्द्राय न मम

६. ॐ धन्वंतरये स्वाहा, इदम् धन्वंतरये न मम

७. ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा, इदम् विश्वेभ्यो देवेभ्यो न मम

८. ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदम् प्रजापतये न मम

फिर बगलामुखी माँ का बीज मंत्र

ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्व दुष्टानाम् वाचम् मुखम् पदम् स्तंभय जिह्वाम् कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा स्वाहा (क्योंकि बीजमंत्र के साथ स्वाहा आता है सो हवन करते हुए स्वाहा यहाँ दो बार बोला जावेगा। कोशिश करें कि चाहे किसी भी मंत्र का यज्ञ हो स्वाहा के बाद घी अथवा सामग्री की आहूतियाँ डालें इससे अधिक फल की प्राप्ति होती है) जब एक माला का यज्ञ पूर्ण हो जाए। (यदि किसी कारणवश हवन के बीच में बोलना - मोबाइल अथवा किसी भी जन से) पड़ रहा हो अथवा उठना - किसी भी आवश्यक कार्य हेतु हो तो ऐसा

करने से पहले ५ आहूतियाँ यज्ञ भगवान महाराज की जय कहते हुए (चारों कोनों पर घी की एक बूंद टपकाकर एक बूँद बीच में और कहें मैंने जो जिस भी देवता का यज्ञ किया है उसका फल उसको अर्पण है) ऐसा करने से यज्ञ में हुई जाने अनजाने में कोई भी त्रुटि हो वह क्षमा हो जाती है एवं हवन चालू रहता है तब यज्ञ नारायण की जय बोलकर एक चम्मच घी की धार यह मंत्र बोलते हुए छोड़ें- ॐ अग्नेय स्विष्टकृते (स्वीकार कीजिए) स्वाहा, इदम् अग्नेय स्विष्टकृते न मम्। आसन के बांए वाली जल की कटोरी से हवन को शांत (ठंडा) करने के लिये हवन कुण्ड पर कुछ बूंदे जल की छिड़क दें। अब शांत भाव से पुनः प्रार्थना करें।

हे बगलामुखी माँ हमने आपके बीज मंत्र का यह हवन करा है। हे माँ इसे स्वीकार करें। हे माँ हमें सुखी भाव से अपने परिवार जनों के साथ वैभवता (सुख समृद्धि) पूर्वक जीते हुए राजा रानियों की तरह भगवान श्री कल्कि के प्राकट्य प्रचार का कार्य करना है। कलियुग की जो भी दुराचारी, आसुरी, अघोरी, तांत्रिक, षड़यंत्रकारी शक्तियाँ हम पर प्राणघातक प्रहार कर रही हैं जो हमारे व्यापार को चारों तरफ से कील रही हैं, हमारे बनते कामों को रोक रही हैं और हर

समय हमारा अनिष्ट करना चाहती है उनका स्तंभन (वहीं रोकना) करें। उन्हें वहीं कीलें। उनसे बचने के लिए हमें अपने सुरक्षा प्रहरी (कमांडोज़) प्रदान कीजिए, हमारे दुश्मनों (दृश्य-अदृश्य), आसुरी शक्तियों अथवा जो हमारे खिलाफ तांत्रिक शक्तियों का प्रयोग कर रहे हैं उनकी जिह्वा खींचकर कठोर मुगदर का वार उनके मस्तिष्क पर कीजिए। हमारे प्रति उनकी बुरा करने व सोचने की शक्ति को कहीं और भेजिए। (फिर जो अपनी व्यक्तिगत परेशानी हो वो बोल दीजिए)। हमें रास्ता दीजिए हमें कल्कि जी का काम करना है।

अब पहला हवन कुण्ड सुरक्षित जगह पर रख दें। दूसरा हवन कुण्ड लें। घी का चम्मच नया लें या पहले वाले को धोले।

महर्षि अगस्त्य द्वारा रचित श्री कल्कि सहस्त्रनामावली

विनियोग (मंत्र की पूर्ति का कारक करने से पूरा फल मिलेगा)

श्री कल्कि भगवान के सहस्त्रनाम माला/ पाठ/ महायज्ञ करने से पहले विनियोग पूर्वक जल एवम् तुलसीपत्र छोड़कर माला/ पाठ/ हवन आदि नीचे

लिखे तरीके से करके देखें।

हाथ में जल एवम् तुलसीपत्र लेकर कहें

ॐ अस्य श्री कल्कि दिव्य सहस्त्रनाम स्तोत्र (मंत्रस्य)

श्रीमन्नारायण भगवान् विष्णु देवता श्री अगस्त्य ऋषिः

अनुष्टुप्छन्दः श्री भगवान कल्कि चरणानुराग प्रीत्यर्थे

माला/ पाठे/ हवन आदि (इनमें से वह बोले जो आप कर रहे हैं)

तुलसीपत्र समर्पणे च विनियोगः

हे श्री कल्कि भगवान! गऊ ब्राह्मणों की रक्षा कीजिए, धर्म की रक्षा कीजिए, कलियुग का नाश कीजिए (इसके बाद अपनी मनोकामना- परेशानियाँ दूर करने को कहकर) भगवान के सामने/ चरणों में/ भूमि पर अर्पण करें।

१. चावल का दाना हवन कुण्ड में डालते हुए कहे- ॐ अग्नये नमः अग्नि आवहायामि

२. चावल का दाना हवन कुण्ड में डालते हुए कहे- सम् पुज्यामि

३. बताशा का टुकड़ा हवन कुण्ड में डालते हुए कहे- गणपत्यादि देवताभ्यो नमः

४. दो बूंद जल हवन कुण्ड के बाहर छिडकते हुए कहे - पावकाग्नये नमः

शुरु की आठ आहूतियाँ (नीचे दी गई) स्वाहा तक बोलते हुए हवन की अग्नि में डालें। घी की एक एक बूँद दांए रखी कटोरी के पानी में टपकाएं। नीचे लिखी प्रत्येक आहुति के बाद उसी सुर्वा (चम्मच) से एक बूंद घी दाईं तरफ रखे पात्र में टपकाएं। इस तरह पात्र में सिर्फ आठ बार ही घी की बूंद टपकेगी।

१. ॐ भूः स्वाहा, इदम् अग्नये न मम
२. ॐ भुवः स्वाहा, इदम् वाहवे न मम
३. ॐ स्वः स्वाहा, इदम् सूर्याय न मम
४. ॐ अग्नये स्वाहा, इदम् अग्नये न मम
५. ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदम् इन्द्राय न मम
६. ॐ धन्वंतरये स्वाहा, इदम् धन्वंतरये न मम
७. ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा, इदम् विश्वेभ्यो देवेभ्यो न मम
८. ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदम् प्रजापतये न मम

इस पुस्तक में संशोधन के लिए श्रीमती प्रतिभा अग्रवाल का विशेष धन्यवाद

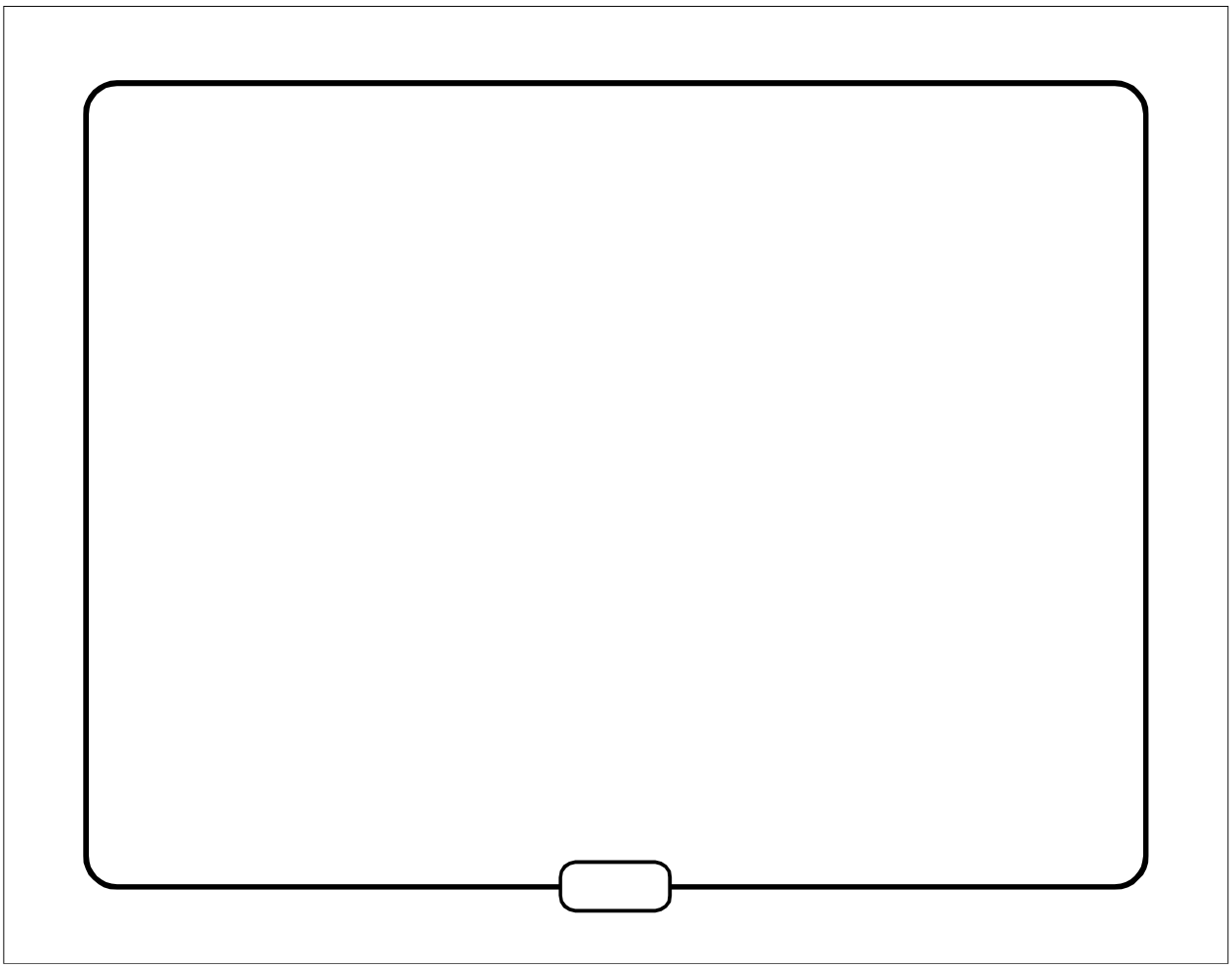

१ ॐ कल्कि भगवते नमः - श्री कल्कि भगवान को नमस्कार
२ ॐ कल्कि म्लेच्छ दल हन्त्रे नमः - म्लेच्छ दल का नाश करने वाले
३ ॐ कल्कि श्री पद्मापतये नमः - पद्मा के पति के लिये
४ ॐ कल्कि श्री रमापतये नमः - रमा के पति के लिये
५ ॐ कल्कि युगावताराय नमः - इस युग के अवतार के लिये
६ ॐ कल्कि निष्कलंकाय नमः - समस्त कलंकों का नाश करने वाले
७ ॐ कल्कि कलिदहनाय नमः - कलियुग को जलाकर राख करने वाले
८ ॐ कल्कि कलि कल्मष नाशाय नमः - कलियुग के पापों को नष्ट करने वाले
९ ॐ कल्कि कलि हृदय विदारणाय नमः - कलियुग के हृदय को चीरने वाले
१० ॐ कल्कि कलि काल कवलाय नमः - कलिकाल को एक ग्रास में खाने वाले
११ ॐ कल्कि कलि जीवनांत-काय नमः - कलिकाल की जिंदगी हरने वाले
१२ ॐ कल्कि कलि कीलकाय नमः - कलिकाल को कीलने वाले
१३ ॐ कल्कि धर्म-विस्ताराय नमः - धर्म का विस्तार करने वाले
१४ ॐ कल्कि कलि-रूप-वधाय नमः - कलि के समस्त रूपों का वध करने वाले

१५ ॐ कल्कि भक्ति-सुलभाय नमः - भक्ति से शीघ्र मिलने वाले
१६ ॐ कल्कि अश्व वाहनाय नमः - घोड़े पर सवार होने वाले
१७ ॐ कल्कि खड्ग धराय नमः - तलवार धारण किये हुए
१८ ॐ कल्कि कलि सर्वनाशाय नमः - सम्पूर्ण कलियुग का नाश करने वाले
१९ ॐ कल्कि ब्रह्मण्य देवाय नमः - ब्राह्मणों के आराध्य
२० ॐ कल्कि गोपालकाय नमः - गौ की रक्षा करने वाले
२१ ॐ कल्कि भक्तजन वल्लभाय नमः - भक्त जनों के परम प्रिय
२२ ॐ कल्कि धर्म-विग्रहाय नमः - धर्म के साक्षात् स्वरूप
२३ ॐ कल्कि असुर-निकन्दनाय नमः - असुरों को रौंदने वाले
२४ ॐ कल्कि विद्याग्र गण्याय नमः - विद्याओं के अग्रणी
२५ ॐ कल्कि राक्षसान्तकाय नमः - राक्षसों का नाश करने वाले
२६ ॐ कल्कि नीलाश्वाय नमः - नीले घोड़े पर चढ़े हुए
२७ ॐ कल्कि सहस्त्राक्षाय नमः - हजारों आँख वाले
२८ ॐ कल्कि पाशांकुश धराय नमः - काल पाश (रस्सी) और अंकुश लिये हुए

२९ ॐ कल्कि सर्वदेव-मयाय नमः - जिनके अन्दर सभी देवता विराजते हैं
३० ॐ कल्कि देवेश्वराय नमः - देवताओं के स्वामी
३१ ॐ कल्कि महावताराय नमः - सब अवतारों में बड़े अवतार
३२ ॐ कल्कि भूमि भार हरणाय नमः - पृथ्वी का भार हरने वाले
३३ ॐ कल्कि सतयुग प्रवर्तकाय नमः - सतयुग को बनाने वाले
३४ ॐ कल्कि सर्व-शक्ति-मते नमः - जो सर्व शक्तिमान है
३५ ॐ कल्कि परम प्रकाशाय नमः - प्रकाशों के प्रकाश
३६ ॐ कल्कि तमो-हराय नमः - अंधेरे और अंधेरगर्दी को दूर करने वाले
३७ ॐ कल्कि राक्षस कुल नाशकाय नमः - राक्षसों के वंश के नाश करने वाले
३८ ॐ कल्कि राक्षस बीज निर्मूलनाय नमः - राक्षसों का बीज खत्म करने वाले
३९ ॐ कल्कि ज्ञानेश्वराय नमः - ज्ञान के मालिक
४० ॐ कल्कि विभूतये नमः - परम ईश्वरीय सत्ता
४१ ॐ कल्कि त्रि-विक्रमाय नमः - तीनों लोकों में पहुँचने वाले
४२ ॐ कल्कि महा-पराक्रमाय नमः - महान पराक्रम वाले

४३ ॐ कल्कि क्रांति-विक्रमाय नमः - विश्व में क्रांति करने वाले
४४ ॐ कल्कि विद्या नाथाय नमः - विद्याओं के नाथ
४५ ॐ कल्कि धरणी-धराय नमः - पृथ्वी को धारण करने वाले
४६ ॐ कल्कि धरा-धराय नमः - धरा (घूमने वाली पृथ्वी) को धारण करने वाले
४७ ॐ कल्कि संत परिपालकाय नमः - संतों के पालन कर्ता
४८ ॐ कल्कि साधु रक्षकाय नमः - साधुओं के रक्षक
४९ ॐ कल्कि सदाचार धारणाय नमः - सदाचार के धारक
५० ॐ कल्कि धर्म-ग्लानि हराय नमः - धर्म की ग्लानि को मिटाने वाले
५१ ॐ कल्कि अधर्म-ध्वंसनाय नमः - अधर्म का नाश करने वाले
५२ ॐ कल्कि विश्व-श्वासाय नमः - विश्व के श्वांस रुप
५३ ॐ कल्कि गुप्त-दुष्ट-वधाय नमः - छिपे दुष्टों का संहार करने वाले
५४ ॐ कल्कि लुप्त-धर्म प्रकाशकाय नमः - लुप्त हो रहे धर्म को जगाने वाले
५५ ॐ कल्कि सनातनाय नमः - अनादि सनातन स्वरूप
५६ ॐ कल्कि शाश्वताय नमः - सर्वदा विद्यमान रहने वाले

५७ ॐ कल्कि आद्याय नमः - सृष्टि के आदि कर्ता
५८ ॐ कल्कि महादेवाय नमः - महान देवता
५९ ॐ कल्कि सुरेशाय नमः - देवताओं के स्वामी
६० ॐ कल्कि सनातन धर्म-प्राणाय नमः - सनातन धर्म के प्राण स्वरूप
६१ ॐ कल्कि महा-प्राणाय नमः - सबके महान जीवन दाता
६२ ॐ कल्कि ज्ञान समुद्राय नमः - ज्ञान के समुद्र
६३ ॐ कल्कि सूर्य-रश्मि-पतये नमः - सूर्य किरणों के स्वामी
६४ ॐ कल्कि बृहस्पतये नमः - गुरु बृहस्पति स्वरूप
६५ ॐ कल्कि सारस्वताय नमः - सरस्वती के प्रवाह स्वरूप
६६ ॐ कल्कि विश्वात्मने नमः - विश्व की आत्मा
६७ ॐ कल्कि जगत प्रर्वतकाय नमः - जगत के जन्म दाता
६८ ॐ कल्कि जगदीश्वराय नमः - जगत के स्वामी
६९ ॐ कल्कि भगवदवताराय नमः - भगवान के अवतार
७० ॐ कल्कि चतुर्विन्शावतराय नमः - २४ अवतारों के स्वरूप

७१ ॐ कल्कि मद-भंजनाय नमः - अहंकार के नाशक
७२ ॐ कल्कि शास्त्र-प्रमाणाय नमः - शास्त्रों के प्रमाण
७३ ॐ कल्कि वेद संरक्षकाय नमः - वेदों के संरक्षक
७४ ॐ कल्कि पथ-प्रदर्शकाय नमः - मार्ग प्रदर्शक
७५ ॐ कल्कि सन्मार्ग-दर्शकाय नमः - सन्मार्ग दिखाने वाले
७६ ॐ कल्कि सन्मार्गाय नमः - स्वयं सत् के मार्ग पर चलने वाले
७७ ॐ कल्कि सत्य प्रकाशाय नमः - सत्य को प्रकाशित करने वाले
७८ ॐ कल्कि पाखण्ड खण्डिने नमः - पाखंड का नाश करने वाले
७९ ॐ कल्कि रजस्तमो विनाशिने नमः - रज, तम को दूर करने वाले
८० ॐ कल्कि ज्ञान-विज्ञान चरणाय नमः - ज्ञान-विज्ञान उनके पैर है
८१ ॐ कल्कि कमल चरणाव्जाय नमः - चरणों से कमल उत्पन्न करने वाले
८२ ॐ कल्कि तिलक विभूषिताय नमः - तिलक से सुशोभित
८३ ॐ कल्कि महिमा मण्डिताय नमः - महिमा से अलंकृत
८४ ॐ कल्कि सृष्टि विधात्रे नमः - सृष्टि का विधान बनाने वाले

८५ ॐ कल्कि विधात्रे नमः - विधाता
८६ ॐ कल्कि ब्रह्मादि महादेवाय नमः - ब्रह्मा आदि के महादेव
८७ ॐ कल्कि विष्णवे नमः - साक्षात विष्णु
८८ ॐ कल्कि महाकालाय नमः - महाकाल स्वरूप
८९ ॐ कल्कि महाविष्णवे नमः - महाविष्णु स्वरूप
९० ॐ कल्कि परमेष्ठिने नमः - सबसे बड़े परम ईष्ट देव
९१ ॐ कल्कि सर्व लोकेश्वराय नमः - सब लोकों के मालिक
९२ ॐ कल्कि प्रभविष्णवे नमः - सर्व समर्थवान
९३ ॐ कल्कि भविष्णवे नमः - सबके भविष्य
९४ ॐ कल्कि महा-प्रलयाय नमः - महाप्रलयकारी
९५ ॐ कल्कि आर्ति-हरणाय नमः - दुःखी के दुखों को हरने वाले
९६ ॐ कल्कि भक्तजन पालकाय नमः - भक्त जनों के रक्षक
९७ ॐ कल्कि मर्यादा पुरुषोत्तमाय नमः - मर्यादा पुरुषोत्तम
९८ ॐ कल्कि अलौकिकाय नमः - लोकों से ऊपर

९९ ॐ कल्कि दिव्य-रूपाय नमः - दिव्य चमत्कारी रूप
१०० ॐ कल्कि दिव्य प्रकृतये नमः - दिव्य प्रकृति वाले
१०१ ॐ कल्कि महाकाशाय नमः - महान आकाश की तरह व्यापक
१०२ ॐ कल्कि आकाश गंगा विहरणाय नमः - आकाश गंगा में विहार करने वाले
१०३ ॐ कल्कि भक्ति लभ्याय नमः - भक्ति से प्राप्त होने वाले
१०४ ॐ कल्कि प्रसादाय नमः - प्रसन्नता के मंगल स्वरूप
१०५ ॐ कल्कि विषाद-हरणाय नमः - उदासीनता के नाशक
१०६ ॐ कल्कि धर्म-स्वरूपाय नमः - धर्म के स्वरूप
१०७ ॐ कल्कि धर्मोत्तमाय नमः - सब धर्मों से उत्तम
१०८ ॐ कल्कि परमोत्तमाय नमः - उत्तमों से उत्तम
१०९ ॐ कल्कि त्रिलोकेश्वराय नमः - तीनों लोकों के स्वामी
११० ॐ कल्कि महा रामाय नमः - श्री राम से भी बड़े
१११ ॐ कल्कि महा केशवाय नमः - श्री कृष्ण से भी बड़े
११२ ॐ कल्कि महा वामनाय नमः - वामन से भी बड़े

११३ ॐ कल्कि महा नृसिंहाय नमः - नृसिंह से भी बड़े
११४ ॐ कल्कि महा कपिलाय नमः - कपिल से भी बड़े
११५ ॐ कल्कि महा शिवाय नमः - शिव से भी बड़े
११६ ॐ कल्कि महा ब्रह्मणे नमः - ब्रह्मा से भी बड़े
११७ ॐ कल्कि सर्व दिग्पालाय नमः - सभी दिशाओं के स्वामी
११८ ॐ कल्कि महाज्योत्यै नमः - ज्योति से भी बड़ी ज्योति
११९ ॐ कल्कि विद्युत् जिह्वाय नमः - बिजली की तरह जीभ वाले
१२० ॐ कल्कि फट्-बीजाक्षराय नमः - फट् बीज मन्त्र वाले
१२१ ॐ कल्कि महाग्नये नमः - अग्नि से भी बड़े
१२२ ॐ कल्कि यज्ञाय नमः - यज्ञ रूप
१२३ ॐ कल्कि महाविकर्षणाय नमः - सबको आकर्षित करने वाले
१२४ ॐ कल्कि खडग सन्धानाय नमः - तलवार चलाने वाले
१२५ ॐ कल्कि धर्मानु-सन्धानाय नमः - धर्म की प्रतिष्ठा करने वाले
१२६ ॐ कल्कि राक्षसान्त कराय नमः - राक्षसों को नष्ट करने वाले

१२७ ॐ कल्कि धर्म-निर्णयाय नमः - धर्म का निर्णय करने वाले
१२८ ॐ कल्कि धर्माधिकारिणे नमः - धर्म के अधिकारी
१२९ ॐ कल्कि धर्म-प्रतिष्ठानाय नमः - धर्म को प्रतिष्ठित करने वाले
१३० ॐ कल्कि धर्म-संस्थापकाय नमः - धर्म के संस्थापक
१३१ ॐ कल्कि धर्म-पारंगाय नमः - धर्म के पार पहुँचने वाले
१३२ ॐ कल्कि धर्म-धुरन्धराय नमः - धर्म के धुरंधर ज्ञाता
१३३ ॐ कल्कि धर्म-जनभाग्याय नमः - धार्मिकों के भाग्य जगाने वाले
१३४ ॐ कल्कि युग परिवर्तनाय नमः - युग परिवर्तन करने वाले
१३५ ॐ कल्कि महाजनाय नमः - सबसे बड़े मानव रूप
१३६ ॐ कल्कि परमेश्वराय नमः - परमात्मा-ईश्वर
१३७ ॐ कल्कि महा झंझावताय नमः - झंझावात (तूफान) के समान
१३८ ॐ कल्कि महोत्पाताय नमः - उत्पातों के उत्पात
१३९ ॐ कल्कि ज्वाला-मुखाय नमः - ज्वालामुखी के समान
१४० ॐ कल्कि विश्व-भूकम्पाय नमः - विश्व में भूकम्प के समान

१४१ ॐ कल्कि ब्रह्माण्ड नायकाय नमः - समस्त ब्रह्माण्ड के नायक
१४२ ॐ कल्कि महोल्का-पाताय नमः - उल्कापात के समान
१४३ ॐ कल्कि दिव्य तुरंगाय नमः - दिव्य घोड़े पर सवार
१४४ ॐ कल्कि जीव जीवनाय नमः - जीवों के जीवन दाता
१४५ ॐ कल्कि नवधा भक्ति साध्याय नमः - नवधा भक्ति से सुलभ
१४६ ॐ कल्कि ज्ञान-गम्याय नमः - ज्ञान से जानने योग्य
१४७ ॐ कल्कि जल तरंगाय नमः - जल की लहरों के समान
१४८ ॐ कल्कि रिपु दमनाय नमः - शत्रुओं का नाश करने वाले
१४९ ॐ कल्कि महा सुरेन्द्राय नमः - इन्द्र के भी इन्द्र देव
१५० ॐ कल्कि शेष-धराय नमः - शेषनाग को धारण करेन वाले
१५१ ॐ कल्कि महा-मृत्युजंयाय नमः - मृत्यु पर विजय प्राप्त करने वाले
१५२ ॐ कल्कि विप्र शरीराय नमः - ब्राह्मण शरीर वाले
१५३ ॐ कल्कि सम्भल जन्मने नमः - सम्भल में प्रगट होने वाले
१५४ ॐ कल्कि आजानु-बाहवे नमः - जिनके हाथ जंघाओं के नीचे तक लम्बे हैं

१५५ ॐ कल्कि प्रलय-स्वरूपाय नमः - प्रलय के स्वरूप
१५६ ॐ कल्कि शत्रु-भयंकराय नमः - शत्रुओं में भय पैदा करने वाले
१५७ ॐ कल्कि अभय-कराय नमः - अभय प्रदान करने वाले
१५८ ॐ कल्कि प्रतिवादि-भयंकराय नमः - विरोधियों के भयदाता
१५९ ॐ कल्कि राक्षस खण्डनाय नमः - राक्षसों को खण्डित करने वाले
१६० ॐ कल्कि शब्द शक्ति विस्फोटाय नमः - शब्द शक्ति के विस्फोटक
१६१ ॐ कल्कि महा-विस्फोटाय नमः - महान विस्फोट करने वाले
१६२ ॐ कल्कि प्रण पालनाय नमः – प्रणों को पूरा करने वाले
१६३ ॐ कल्कि महा गणेशाय नमः - गणेश से भी बड़े
१६४ ॐ कल्कि महा स्वामिने नमः - महान् स्वामी
१६५ ॐ कल्कि पतीनां पतये नमः - पतियों के भी पति
१६६ ॐ कल्कि चेतना चैतन्याय नमः - चेतना को भी चैतन्य करने वाले
१६७ ॐ कल्कि चेतना धानाय नमः - चेतना के आधार (स्तम्भ)
१६८ ॐ कल्कि शर-सन्धानाय नमः - बाण को चलाने वाले

१६९ ॐ कल्कि आग्नेयाय नमः - आग्नेय अस्त्रों को धारण करने वाले
१७० ॐ कल्कि पूर्णात्-पूर्णतमाय नमः - पूर्ण से भी पूर्णतम
१७१ ॐ कल्कि पूर्ण शेषाय नमः - आदि से अन्त तक पूर्ण
१७२ ॐ कल्कि अति-विशिष्टाय नमः - अत्यन्त विशिष्ट
१७३ ॐ कल्कि आकाशो-त्तोलनाय नमः - आकाश को तौलने वाले
१७४ ॐ कल्कि महेश्वराय नमः - महान ईश्वर
१७५ ॐ कल्कि महतो महीयसे नमः - बड़ों के भी बड़े
१७६ ॐ कल्कि ऐश्वयार्य नमः - ऐश्वर्यों को प्रदान करने वाले
१७७ ॐ कल्कि अणोरणीयसे नमः - अणु (कणों) से भी अणु
१७८ ॐ कल्कि महतां-महद्भ्यो नमः - महान महिमा वाले
१७९ ॐ कल्कि ब्रह्म-वर्चसे नमः - ब्रह्म के समान बल वाले
१८० ॐ कल्कि ब्रह्म तेजसे नमः - ब्रह्म के समान तेज वाले
१८१ ॐ कल्कि विद्वत्-जन-पूज्याय नमः - विद्वानों से पूजनीय
१८२ ॐ कल्कि ज्ञानगंगा धराय नमः - ज्ञान के गंगाधर

१८३ ॐ कल्कि महा मंत्राय नमः - महा मंत्र स्वरूप
१८४ ॐ कल्कि महा तंत्राय नमः - महा तंत्र स्वरूप
१८५ ॐ कल्कि महा यंत्राय नमः - महा यंत्र स्वरूप
१८६ ॐ कल्कि महानुष्ठानाय नमः - महानुष्ठान रूप
१८७ ॐ कल्कि असंभवनाय नमः - असंभव को सम्भव करने वाले
१८८ ॐ कल्कि युग-प्रबोधनाय नमः - युग को जगाने वाले
१८९ ॐ कल्कि राक्षस दल संहारिणे नमः - राक्षस दल का संहार करने वाले
१९० ॐ कल्कि भक्तजन विहारिणे नमः - भक्त जनों के साथ रहने वाले
१९१ ॐ कल्कि म्लेच्छ विदारिणे नमः - म्लेच्छों का नाश करने वाले
१९२ ॐ कल्कि शार्दूल विक्रीडिताय नमः - सिंह से खेलने वाले
१९३ ॐ कल्कि महाराजाय नमः - महाराजों के महाराज
१९४ ॐ कल्कि हाहाकार हुंकाराय नमः - हाहाकार के हुंकार स्वरूप
१९५ ॐ कल्कि काल कालेश्वराय नमः - काल के भी महाकाल
१९६ ॐ कल्कि धूम धूम दहनाय नमः - धूं धूं कर जलाने वाले

१९७ ॐ कल्कि महाकाली-शक्ति ग्रहणाय नमः - महाकाली की शक्ति को ग्रहण करने वाले

१९८ ॐ कल्कि देवशक्ति ग्रहणाय नमः - देवताओं की शक्तियों को ग्रहण करने वाले

१९९ ॐ कल्कि परशुराम-शक्तिधराय नमः - परशुराम की शक्ति को धारण करने वाले

२०० ॐ कल्कि वज्रांग शक्तये नमः - हनुमानजी की शक्ति को धारण करने वाले

२०१ ॐ कल्कि नीला-भाय नमः - नील अंग वाले

२०२ ॐ कल्कि लीलाधराय नमः - अनेक लीला चरित्र दिखाने वाले

२०३ ॐ कल्कि यज्ञ धराय नमः - यज्ञों को धारण करने वाले

२०४ ॐ कल्कि प्रलय कराय नमः - प्रलय कर देने वाले

२०५ ॐ कल्कि शंख गर्जनाय नमः - शंख की ध्वनि करने वाले

२०६ ॐ कल्कि प्रलय कालीन दर्शनाय नमः - प्रलयकाल की तरह दर्शन देने वाले

२०७ ॐ कल्कि भक्तजन सुखाय नमः - भक्त जनों को सुख देने वाले

२०८ ॐ कल्कि युग प्रज्वलनाय नमः - पूरा युग जलाने की क्षमता रखने वाले

२०९ ॐ कल्कि डिमडिम नादाय नमः - धर्म की दुन्दुभि बजाने वाले

२१० ॐ कल्कि अं अं अमृत कलशाय नमः – अमृत कलश को धारण करने वाले
२११ ॐ कल्कि ईं ईं ईशावास्याय नमः – विश्व ही जिनका वास है
२१२ ॐ कल्कि उं उं ओंकारेश्वराय नमः – ओंकार के ईश्वर
२१३ ॐ कल्कि ऐं ऐं ओंकार स्वरूपाय नमः – ओंकार स्वरूप
२१४ ॐ कल्कि ओं ओं उद्भट कवचाय नमः – अभेद्य कवच धारण करने वाले
२१५ ॐ कल्कि कं कं कालाति-क्रमणाय नमः – समय के दास नहीं
२१६ ॐ कल्कि खं खं खलदल दलनाय नमः – दुष्टों के दल का नाश करने वाले
२१७ ॐ कल्कि गं गं गंगाजल पावनाय नमः – गंगाजल को भी पवित्र करने वाले
२१८ ॐ कल्कि घं घं घंटा निनादाय नमः – घंटा ध्वनि के समान स्वर वाले
२१९ ॐ कल्कि चं चं चांडाल हन्त्रे नमः – चाण्डालों को मारने वाले
२२० ॐ कल्कि छं छं कल्कि ताण्डवाय नमः – कल्कि ताण्डव करने वाले
२२१ ॐ कल्कि जं जं जम्बूद्विपाधिपाय नमः – जम्बूद्वीप के अधिष्ठाता
२२२ ॐ कल्कि झं झं रणझंकाराय नमः – संग्राम में झंकार करने वाले
२२३ ॐ कल्कि तं तं तनु सहस्त्रांशवे नमः – शरीर से हजारों किरणे निकालने वाले

२२४ ॐ कल्कि थं थं पुन-रुत्थानाय नमः - पुनः निर्माण करने वाले
२२५ ॐ कल्कि दं दं अरि-दमनाय नमः - शत्रुओं का दमन करने वाले
२२६ ॐ कल्कि धं धं मूर्धन्याय नमः - सबके मस्तक पर विराजमान
२२७ ॐ कल्कि नं नं नमस्काराय नमः - नमस्कार के योग्य
२२८ ॐ कल्कि टं टं शत्रूणां-प्रहाराय नमः - शत्रुओं पर प्रहार करने वाले
२२९ ॐ कल्कि ठं ठं दिव्य खड्गायुधाय नमः - दिव्य खड़ग शस्त्र धारी
२३० ॐ कल्कि डं डं यमदण्डाय नमः - यमराज का डंडा लिये हुए
२३१ ॐ कल्कि ढं ढं राक्षस यमनाय नमः - राक्षसों के नियंत्रक (नियंता)
२३२ ॐ कल्कि पं पं भयानकाय नमः - भयों को भय देने वाले
२३३ ॐ कल्कि फं फं शेष फूत्काराय नमः - शेषनाग की तरह फुंकार करने वाले
२३४ ॐ कल्कि बं बं बिरंचि-रुपाय नमः - विश्व का नक्शा अपने में संजोकर रखने वाले
२३५ ॐ कल्कि भं भं कालानलाय नमः - कालानल अग्नि के समान तेजस्वी
२३६ ॐ कल्कि मं मं मशकी-कृत-दानवाय नमः - दानवों को मच्छर की तरह मसल देने वाले

२३७ ॐ कल्कि यं यं-अधर्म यामिनी सूर्याय नमः - अधर्म की रात को हटाकर प्रकाश देने वाले सूर्य

२३८ ॐ कल्कि रं रं राक्षस-कुल कालाय नमः - राक्षस वंश के लिये मृत्यु समान

२३९ ॐ कल्कि लं लं प्रलम्ब-शरीराय नमः - बहुत लम्बे शरीर वाले

२४० ॐ कल्कि वं वं महादावानलाय नमः - विश्व में अग्नि के समान प्रकाशित

२४१ ॐ कल्कि शं शं भक्त-जन-शान्ति कराय नमः - भक्तजनों को शांति देने वाले

२४२ ॐ कल्कि सं सं समुद्र पर्यन्त प्रभावाय नमः - सभी समुद्रों तक प्रभाव दिखाने वाले

२४३ ॐ कल्कि षं षं षट चक्र भेदन महायोगाय नमः - सहस्त्रार आदि आठ चक्र एवं कुण्डलिनी तक खोल देने वाले

२४४ ॐ कल्कि हं हं अट्टहासाय नमः - अट्टाहास करने वाले

२४५ ॐ कल्कि क्षं क्षं क्षण-क्षण-दुष्टनाशन तत्पराय नमः - क्षण क्षण में दुष्टों का नाश करने के लिये तत्पर रहनेवाले

२४६ ॐ कल्कि त्रं त्रं अधर्म-गल त्रोटकाय नमः - अधर्म का गला तोड़ देने वाले

२४७ ॐ कल्कि ज्ञं ज्ञं ज्ञानि-जन हर्षदाय नमः - ज्ञानी जनों को प्रसन्नता देने वाले
२४८ ॐ कल्कि ऐं ऐं महातीर्थाय नमः - सबसे बड़े तीर्थ के समान
२४९ ॐ कल्कि ह्रीं ह्रीं संकट हरणाय नमः - सभी संकटों को दूर करने वाले
२५० ॐ कल्कि क्लीं क्लीं कलि-कालुष्य निवारकाय नमः - कलिकाल की कालिमा को हटाने वाले
२५१ ॐ कल्कि हुं हुं हुंकारमात्र शत्रुनाशाय नमः - एक हुंकार से शत्रुओं का नाश करने वाले
२५२ ॐ कल्कि हूं हूं हर हर कल्कि भगवते नमः - हर हर की आवाज करने वाले कल्कि भगवान
२५३ ॐ कल्कि जूं जूं ज्वर हरणाय निष्कलंकाय नमः - ज्वर आदि रोग व्याधियों को दूर करने वाले
२५४ ॐ कल्कि सः सः भक्तगण सहायकाय नमः - भक्तों की सहायता करने वाले
२५५ ॐ कल्कि हां हां हरि ओम् हरि ओम् कल्कि भगवते नमः - हरि ओम की ध्वनि का विस्तार करने वाले

२५६ ॐ कल्कि श्रीं श्रीं अनन्त श्री कल्कि महाराजाय नमः - अनंत शोभावाले महाराजाओं के महासम्राट श्री कल्कि

२५७ ॐ कल्कि क्रीं क्रीं राक्षसमूलनाशाय नमः - राक्षसी शक्तियों का बीज नाश करने वाले

२५८ ॐ कल्कि क्रौं क्रौं राक्षसमूलनाशाय नमः - राक्षसों की जड़ उखाड़ने वाले

२५९ ॐ कल्कि ह्रौं ह्रौं हरये कल्कि नारायणाय नमः - तुरन्त नाम जप से दुःख हरने वाले कल्कि नारायण

२६० ॐ कल्कि प्रौं प्रौं ग्रहेशाय नमः - नव ग्रहों के स्वामी

२६१ ॐ कल्कि भद्रकाली-करालाय नमः - भद्रकाली की तलवार से भी अधिक कराल

२६२ ॐ कल्कि नक्षत्र ग्रहेशाय नमः - २७ नक्षत्रों के मालिक

२६३ ॐ कल्कि सार्व-भौमाय नमः - अखिल ब्रह्माण्ड के नायक

२६४ ॐ कल्कि कलि-धुन्ध-निवारणाय नमः - कलियुग की धुंध हटाने वाले

२६५ ॐ कल्कि शरणागत स्वामिने नमः - शरणागत भक्तों के स्वामी

२६६ ॐ कल्कि भक्त वत्सलाय नमः - भक्तों को प्यार करने वाले

२६७ ॐ कल्कि करूणा वरुणालयाय नमः – करुणा के सागर
२६८ ॐ कल्कि परम दयालवे नमः – दया के निधान
२६९ ॐ कल्कि कृपा निधानाय नमः – कृपा के निधान
२७० ॐ कल्कि पाप कुलध्वंसाय नमः – पापी कुल को मिटाने वाले
२७१ ॐ कल्कि गौ विप्र वेद रक्षकाय नमः – गौ वेद ब्राह्मण के रक्षक
२७२ ॐ कल्कि सहस्त्र भानु प्रकाशाय नमः – हजारों सूर्य के प्रकाश वाले
२७३ ॐ कल्कि सत्यशील ध्वजाय नमः – सत्य, शील की ध्वजा को फहराने वाले
२७४ ॐ कल्कि यशोवर्धनाय नमः – विश्व में यश को फैलाने वाले
२७५ ॐ कल्कि महा वीराय नमः – महान वीर
२७६ ॐ कल्कि शत्रुंजयाय नमः – शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाले
२७७ ॐ कल्कि नामोच्चारण पवित्राय नमः – जिनके नाम के उच्चारण मात्र से पवित्रता होती है
२७८ ॐ कल्कि संकीर्तन प्रियाय नमः – भजन कीर्तन से खुश होने वाले
२७९ ॐ कल्कि रिद्धि सिद्धि पूजिताय नमः – रिद्धि सिद्धि द्वारा पूजित

२८० ॐ कल्कि महा-शून्य संगीताय नमः - महाशून्य में संगीत समान
२८१ ॐ कल्कि महा-नादाय नमः - महान् शब्द के समान
२८२ ॐ कल्कि विश्वम्भराय नमः - विश्व के पालन हार
२८३ ॐ कल्कि विश्वेश्वराय नमः - संसार के मालिक
२८४ ॐ कल्कि जगत्पतये नमः - जगत के एक मात्र स्वामी
२८५ ॐ कल्कि ध्रुवाय ध्रुव तमाय नमः - ध्रुव से भी अधिक ध्रुव
२८६ ॐ कल्कि हन् हन् दुष्टजन हन्त्रे नमः - दुष्ट जनों को मारने वाले
२८७ ॐ कल्कि फं फं शेषसहस्त्र फणाय नमः - शेषनाग के सहस्त्र फन वाले
२८८ ॐ कल्कि परमाणु भेदकाय नमः - परमाणु को तोड़ने वाले
२८९ ॐ कल्कि अणु विस्फोटकाय नमः - अणुओं का विस्फोट करने वाले
२९० ॐ कल्कि प्राणाय नमः - सब के प्राण (श्वांस) स्वरुप
२९१ ॐ कल्कि उदानाय नमः - सबके उदान वायु स्वरुप
२९२ ॐ कल्कि समानाय नमः - नाभि चक्र में रहने वाली समान वायु स्वरुप
२९३ ॐ कल्कि व्यानाय नमः - अंग अंग में बसने वाले

२९४ ॐ कल्कि सर्वस्वाय नमः - समस्त वैभवों के मालिक
२९५ ॐ कल्कि परात्पराय नमः - परे से परे -ब्रह्म से भी ऊपर
२९६ ॐ कल्कि अलंकरणाय नमः - महान आभूषण स्वरुप
२९७ ॐ कल्कि विध्वंसनाय नमः - विध्वंस स्वरूप
२९८ ॐ कल्कि शास्त्र प्रमाणाय नमः - शास्त्रों के प्रमाण स्वरुप
२९९ ॐ कल्कि प्रणत पालकाय नमः - शरणागत रक्षक
३०० ॐ कल्कि ब्रह्म समाधिने नमः - ब्रह्म को समाधिस्थ करने वाले
३०१ ॐ कल्कि अग्नीश्वराय नमः - अग्नि के साक्षी
३०२ ॐ कल्कि यज्ञ-नारायणाय नमः - यज्ञ नारायण भगवान स्वरुप
३०३ ॐ कल्कि भूत-नाथाय नमः - पंच महाभूतों के स्वामी
३०४ ॐ कल्कि भूत भावनाय नमः - पंच तत्व को बनाने वाले
३०५ ॐ कल्कि सृष्टि निर्माणाय नमः - सृष्टि के निर्माता
३०६ ॐ कल्कि सृष्टि समापनाय नमः - सृष्टि को समाप्त करने वाले
३०७ ॐ कल्कि वैया-करणाय नमः - व्याकरण शास्त्र के ज्ञाता

३०८ ॐ कल्कि महा-वेदांताय नमः - वेदांत से ऊपर
३०९ ॐ कल्कि महायोगिने नमः - महान योगी
३१० ॐ कल्कि प्रत्यक्षावगमाय नमः - प्रत्यक्ष अनुभव (स्वप्न, जागृत, वाणी व मानसिक) देने वाले
३११ ॐ कल्कि पुण्येश्वराय नमः - पुण्यों के ईश्वर
३१२ ॐ कल्कि तेजसोराशये नमः - तेजों की राशि
३१३ ॐ कल्कि शिरो मणये नमः - शिरोमणियों में श्रेष्ठ
३१४ ॐ कल्कि विश्वेश्वरेश्वराय नमः - विश्व के ईश्वरों के ईश्वर
३१५ ॐ कल्कि विश्व रूपाय नमः - विश्व के रूप देने वाले
३१६ ॐ कल्कि अनाद्यनन्ताय नमः - अनादि और अनन्त
३१७ ॐ कल्कि अग्नि दहनाय नमः - अग्नि को भी जला देने वाले
३१८ ॐ कल्कि व्यात्ता-ननाय नमः - मुख फैलाए हुए
३१९ ॐ कल्कि त्वरमाणाय नमः - शीघ्र गति वाले
३२० ॐ कल्कि समृद्ध वेगाय नमः - सर्वदा वेग धारण किये हुए

३२१ ॐ कल्कि लोक-क्षयाय नमः - लोकों में प्रलय कर सकने वाले
३२२ ॐ कल्कि आदि-कर्त्रे नमः - सृष्टि के आदि रचियता
३२३ ॐ कल्कि यमान्तकाय नमः - यमराज के भी यमराज
३२४ ॐ कल्कि कालान्तकाय नमः - समय की सीमा से बाहर वाले
३२५ ॐ कल्कि अनन्त वीर्याय नमः - अनन्त पराक्रम वाले
३२६ ॐ कल्कि अमितं विक्रमाय नमः - असीम गति वाले
३२७ ॐ कल्कि महा जनकाय नमः - सबके पिता
३२८ ॐ कल्कि अप्रतिम प्रभावाय नमः - अचिन्तनीय प्रभावशाली
३२९ ॐ कल्कि ईश्वरावतराय नमः - ईश्वरों को अवतार देने वाले
३३० ॐ कल्कि विश्वनिधानाय नमः - विश्व के प्राणों के खजाने
३३१ ॐ कल्कि निदानाय नमः - सब समस्याओं के समाधान करने वाले
३३२ ॐ कल्कि कलि कालज्वराय नमः - कलि के लिये तीव्र ज्वर स्वरूप
३३३ ॐ कल्क्रि समुद्र धन्वन्तरये नमः - समुद्र में धन्वन्तरी के समान
३३४ ॐ कल्कि सागर शोषणाय नमः - सागरों को सुखा देने वाले

३३५ ॐ कल्कि दयामृतवार्षिणे नमः – दया का अमृत बरसाने वाले
३३६ ॐ कल्कि आकाश गंगा केशाय नमः – आकाश गंगा जिनके केश के समान है
३३७ ॐ कल्कि सार्वभौम सनातनाय नमः – सार्वभौम सनातनधर्म स्वरूप
३३८ ॐ कल्कि राज राजेश्वराय नमः – राजा महाराजाओं के ईश्वर
३३९ ॐ कल्कि वेद चर्तुमुखाय नमः – वेदों के ब्रह्मा
३४० ॐ कल्कि यति सती शूर वल्लभाय नमः – यती, सती शूरवीर के परम प्रिय स्वामी
३४१ ॐ कल्कि परम-गुह्याय नमः – परम गोपनीय तथा अदृश्य
३४२ ॐ कल्कि महामहिम्ने नमः – महान महिमा वाले
३४३ ॐ कल्कि विभूति मते नमः – सब ऐश्वर्यों के नायक स्वरूप
३४४ ॐ कल्कि महा विभवाय नमः – महान ऐश्वर्य वाले
३४५ ॐ कल्कि गायत्री तेजसे नमः – गायत्री मंत्र में अपना तेज डालने वाले
३४६ ॐ कल्कि वज्रायुधाय नमः – वज्र अस्त्र धारण करने वाले
३४७ ॐ कल्कि वित्तेशाय नमः – समस्त धनों के स्वामी
३४८ ॐ कल्कि वरुणोत्तमाय नमः – वरुणों (जल देवता) में उत्तम

३४९ ॐ कल्कि कुबेर स्वामिने नमः - कुबेर के स्वामी
३५० ॐ कल्कि नक्षत्र पातनाय नमः - नक्षत्रों को गिरा देने की शक्ति वाले
३५१ ॐ कल्कि ग्रह-ग्रहणाय नमः - ग्रहों को वश में करने वाले
३५२ ॐ कल्कि आत्म स्वभाव स्थाय नमः - अपने स्वभाव के मालिक
३५३ ॐ कल्कि हृदय दीपाय नमः - हृदय में दीपक जलाने वाले
३५४ ॐ कल्कि ज्ञान दीपाय नमः - ज्ञान का दीपक जलाने वाले
३५५ ॐ कल्कि कर्म फल दाय नमः - सबको कर्मफल देने वाले
३५६ ॐ कल्कि सप्तऋषि गोत्र रक्षकाय नमः - सप्त ऋषियों के गोत्रों के रक्षक
३५७ ॐ कल्कि गणितेश्वराय नमः - गणित कर जनसंख्या पर नियंत्रण रखने वाले
३५८ ॐ कल्कि पाप मोचनाय नमः - पापों तथा पापियों से मुक्त करने वाले
३५९ ॐ कल्कि कलि दावाग्नये नमः - कलि की आग बुझाने वाले
३६० ॐ कल्कि योग संन्यासाय नमः - योग तथा संन्यास के स्वरुप
३६१ ॐ कल्कि त्रयी धर्माय नमः - धर्म, अर्थ, मोक्ष देने वाले
३६२ ॐ कल्कि योग क्षेम कराय नमः - सबकी जीविका चलाने वाले

३६३ ॐ कल्कि शब्द प्रमाणाय नमः – जिनके शब्द ही प्रमाण हैं
३६४ ॐ कल्कि आत्मोपदेशाय नमः – आत्मा को उपदेश देने वाले
३६५ ॐ कल्कि मधु निकुन्जाय नमः – बसंत ऋतु की तरह भक्तों को आनंदित करने वाले
३६६ ॐ कल्कि करतल विश्वाय नमः – हथेली में सारा संसार धारण करने वाले
३६७ ॐ कल्कि महाबीजाय नमः – समस्त बीजों के जन्म दाता
३६८ ॐ कल्कि सृष्टि बीजाय नमः – सृष्टि के आदि कारण
३६९ ॐ कल्कि साक्षिणे नमः – सबके साक्षी स्वरूप
३७० ॐ कल्कि साक्ष्याय नमः – सबके साक्ष्य (प्रमाण)
३७१ ॐ कल्कि शिवाय शिवतराय नमः – परम कल्याण शिव स्वरूप दाता
३७२ ॐ कल्कि न्यायेश्वराय नमः – न्याय के ईश्वर
३७३ ॐ कल्कि महाप्रभावाय नमः – प्रभावों के प्रभाव
३७४ ॐ कल्कि निधानाय नमः – धनों के धन
३७५ ॐ कल्कि पितामह पितामहाय नमः – पूर्वजों के भी पूर्वज
३७६ ॐ कल्कि शरण सुखदाय नमः – शरणागत को सुख प्रदान करने वाले

३७७ ॐ कल्कि अपरा जिताय नमः - हार नहीं मानने वाले
३७८ ॐ कल्कि आसुरी बीज नाशाय नमः - आसुरी शक्ति के बीज को नाश करने वाले
३७९ ॐ कल्कि दैवी सम्पत् प्रणवाय नमः - दैवी संपदा को बचाने वाले
३८० ॐ कल्कि प्रकृती श्वराय नमः - प्रकृति के स्वामी
३८१ ॐ कल्कि दैवी संसद अध्यक्षाय नमः - दैवी संसद के अध्यक्ष
३८२ ॐ कल्कि भृकुटि-वक्राय नमः - तनी भौंहे वाले
३८३ ॐ कल्कि ब्रह्मेशाय नमः - ब्रह्मा के ईश्वर
३८४ ॐ कल्कि शेष विशेषाय नमः - शेषनाग को बल देने वाले
३८५ ॐ कल्कि अव्यक्त व्यक्तये नमः - गुप्त से गुप्त को प्रकट करने वाले
३८६ ॐ कल्कि व्यक्ता-व्यक्ताय नमः - साकार और निराकार रूप वाले
३८७ ॐ कल्कि अचिन्त्य रूपाय नमः - अवर्णनीय स्वरूप वाले
३८८ ॐ कल्कि महा-स्वरूपाय नमः - महान स्वरूप वाले
३८९ ॐ कल्कि आदित्य वर्णाय नमः - सूर्य के समान छवि वाले
३९० ॐ कल्कि ज्वलत् केवलाय नमः - प्रकाशमान शरीर वाले

३९१ ॐ कल्कि अधि-दैवाय नमः - देवताओं को वश में करने वाले
३९२ ॐ कल्कि स्व राज्याय नमः - अपना राज्य स्थापित करने वाले
३९३ ॐ कल्कि स्व साम्राज्याय नमः - विश्व में अपना साम्राज्य स्थापित करने वाले
३९४ ॐ कल्कि धर्म साम्राज्याय नमः - धर्म का साम्राज्य स्थापित करने वाले
३९५ ॐ कल्कि अधि-यज्ञाय नमः - यज्ञों में सहायता करने वाले
३९६ ॐ कल्कि अधि-भूताय नमः - समस्त जड़-चेतन के स्वामी
३९७ ॐ कल्कि हिरण्य-गर्भाय नमः - सब तेजों के पूंज के समान
३९८ ॐ कल्कि अधिकृत-शक्तये नमः - सब शक्तियों के अधिकारी
३९९ ॐ कल्कि योगमाया प्रकाशाय नमः - योगमाया को प्रकाश देने वाले
४०० ॐ कल्कि महा वासुदेवाय नमः - वासुदेव के भी वासुदेव
४०१ ॐ कल्कि दुष्ट-बीज-मर्दनाय नमः - दुष्टों के बीज नाशक
४०२ ॐ कल्कि प्रमथ नाथाय नमः - कामदेव के स्वामी
४०३ ॐ कल्कि अनाथ नाथाय नमः - अनाथों के नाथ
४०४ ॐ कल्कि शशि सूर्य धराय नमः - चन्द्र और सूर्य को धारण करने वाले

४०५ ॐ कल्कि शब्द ब्रह्मात्मने नमः - शब्द ब्रह्म के स्वरूप
४०६ ॐ कल्कि योग-संसिद्धाय नमः - योग में पूर्ण सिद्ध
४०७ ॐ कल्कि महा परमात्मने नमः - महान परमात्मा
४०८ ॐ कल्कि वात निग्रहणाय नमः - वायु को नियंत्रित करने वाले
४०९ ॐ कल्कि सर्व भूतस्थिताय नमः - समस्त प्राणियों में स्थित
४१० ॐ कल्कि सूर्याश्व प्रग्रहाय नमः - सूर्य के सभी घोड़ों की ताकत अपने घोड़े में समा लेने वाले
४११ ॐ कल्कि नवधा भक्ति प्रसादाय नमः - नवधा भक्ति से प्रसन्न होने वाले
४१२ ॐ कल्कि ज्ञान विज्ञानात्मने नमः - ज्ञान और विज्ञान सम्भालने वाले
४१३ ॐ कल्कि प्रशान्त तनवे नमः - अत्यंत शांति स्वरूप शरीर वाले
४१४ ॐ कल्कि दुष्टनाशसंकल्पाय नमः - दुष्टों के नाश का संकल्प करने वाले
४१५ ॐ कल्कि भूसुर मूर्तये नमः - श्रेष्ठ ब्राह्मण कुल में जन्म लेने वाले
४१६ ॐ कल्कि गरीयसे नमः - अणिमा, गरिमा इत्यादि अष्ट सिद्धियों के स्वामी
४१७ ॐ कल्कि महत्तत्वाय नमः - सबसे बड़े तत्व वाले

४१८ ॐ कल्कि कलिदल नाशिने नमः - कलि के परिवार के नाशक
४१९ ॐ कल्कि धन्या स्पदाय नमः - अपनी चरणधूली से भक्तों को धन्य करने वाले
४२० ॐ कल्कि प्राति पदिकाय नमः - अक्षरों के निर्माता
४२१ ॐ कल्कि द्यावा पृथ्वी-धराय नमः - आकाश धरती के धारक
४२२ ॐ कल्कि धर्म-पूताय नमः - धर्म स्वरूप रक्षक
४२३ ॐ कल्कि धर्म-युद्धाय नमः - धर्म युद्ध करने वाले
४२४ ॐ ॐ कल्कि कारण-कारणाय नमः - कारणों के भी कारण
४२५ ॐ कल्कि रोम हर्षणाय नमः - रोम रोम को प्रसन्न करने वाले
४२६ ॐ कल्कि रत्न-गर्भे-श्वराय नमः - धरती को रत्न गर्भा बनाने वाले
४२७ ॐ कल्कि कार्या-कार्य-प्रमाणाय नमः - कार्यों के कारण को भी प्रमाणित करने वाले
४२८ ॐ कल्कि अभयाय नमः - अभय देने वाले
४२९ ॐ कल्कि प्राण प्रदाय नमः - प्राण प्रदान करने वाले
४३० ॐ कल्कि सम्पूर्ण कलावताराय नमः - संपूर्ण कलाओं के अवतार
४३१ ॐ कल्कि आकाश भेदनाय नमः - आकाश का भी भेदन करने वाले

४३२ ॐ कल्कि महा मेघाय नमः - मेघों के भी महामेघ
४३३ ॐ कल्कि पर्जन्याय नमः - अन्न उत्पन्न करने वाले
४३४ ॐ कल्कि विद्युत् स्फुलिंगाय नमः - बिजली की तरह चिंगारी वाले
४३५ ॐ कल्कि घन-गर्जिताय नमः - बादलों की तरह गरजने वाले
४३६ ॐ कल्कि यमान्त काराय नमः - यमराज को बदलने वाले
४३७ ॐ कल्कि धर्मराज-निर्देशाय नमः - धर्मराज को आदेश देने वाले
४३८ ॐ कल्कि वक्र-दृष्टये नमः - टेढ़ी नजर वाले
४३९ ॐ कल्कि शुभ दृष्टये नमः - कल्याणकारी दृष्टि वाले
४४० ॐ कल्कि दिव्य-दृष्टये नमः - दिव्य दृष्टि वाले
४४१ ॐ कल्कि दूरंगम दृष्टये नमः - दूर दृष्टि वाले
४४२ ॐ कल्कि तमसो-ज्योति-र्गमये नमः - अंधेरे में उजाला फैलाने वाले
४४३ ॐ कल्कि पातकी पातनाय नमः - पापियों का पतन करने वाले
४४४ ॐ कल्कि दुष्टोच्चाटनाय नमः - दुष्टों का उच्चाटन करने वाले
४४५ ॐ कल्कि महा मंत्रे-श्वराय नमः - महा मंत्रों के ईश्वर

४४६ ॐ कल्कि महा तंत्रे-श्वराय नमः - महा तंत्रों के ईश्वर
४४७ ॐ कल्कि महा यंत्रे-श्वराय नमः - महा यंत्रों के ईश्वर
४४८ ॐ कल्कि महाकाल कवलाय नमः - महाकाल को ग्रास करने वाले
४४९ ॐ कल्कि महापातक नाशाय नमः - महापातक को नष्ट करने वाले
४५० ॐ कल्कि आधार-तमाय नमः - सबको आधार देने वाले
४५१ ॐ कल्कि कालरात्रि-प्रबोधाय नमः - कालरात्रि को जगाने वाले
४५२ ॐ कल्कि चंडमुंड हराय नमः - चंडमुंड को मारने वाले
४५३ ॐ कल्कि संसार पाराय नमः - भवसागर पार कराने वाले
४५४ ॐ कल्कि कलि प्रवेश रोधाय नमः - कलि काल का प्रवेश रोकने वाले
४५५ ॐ कल्कि कलि कलुष हराय नमः - कलि से जन्मी मलीनता को दूर करने वाले
४५६ ॐ कल्कि हस्त-धृत-खड्गाय नमः - हाथ में तलवार धारण करने वाले
४५७ ॐ कल्कि विद्या निवासाय नमः - सब विद्याओं में निवास करने वाले
४५८ ॐ कल्कि कलि ग्रीवा-भंजनाय नमः - कलि की गर्दन मरोड़ देने वाले
४५९ ॐ कल्कि कलि वक्षो भेदनाय नमः - कलि का कलेजा चीरने वाले

४६० ॐ कल्कि कलि नेत्र स्फोटकाय नमः - कलि की आँख फोड़ने वाले
४६१ ॐ कल्कि जगद् वैद्यनाथाय नमः - संसार के वैद्यों के स्वामी
४६२ ॐ कल्कि कलि पाद त्रोटनाय नमः - कलि काल के पैर तोड़ने वाले
४६३ ॐ कल्कि कलि मारकाय नमः - कलि काल को मारने वाले
४६४ ॐ कल्कि कलि दम्भ विनाशाय नमः - कलि के पाखण्ड को नाश करने वाले
४६५ ॐ कल्कि कलि प्रभाव नाशाय नमः - कलिकाल का प्रभाव नाश करने वाले
४६६ ॐ कल्कि कलि पातनाय नमः - कलि काल का पतन करने वाले
४६७ ॐ कल्कि धर्म-गम्याय नमः - धर्म के द्वारा प्राप्त होने वाले
४६८ ॐ कल्कि भक्ति गम्याय नमः - भक्ति द्वारा प्रत्यक्ष दर्शन देने वाले
४६९ ॐ कल्कि भक्ति लम्याय नमः - भक्ति के द्वारा प्राप्त होने वाले
४७० ॐ कल्कि भक्ति प्रसन्नाय नमः - भक्ति से प्रसन्न होने वाले
४७१ ॐ कल्कि भक्ति साध्याय नमः - भक्ति से सिद्ध होने वाले
४७२ ॐ कल्कि भक्त निर्व-हणाय नमः - भक्तों का निर्वाह करने वाले
४७३ ॐ कल्कि भक्त भगवते नमः - भक्तों के भगवान

४७४ ॐ कल्कि पुनरूद्धारकाय नमः - सृष्टि का पुनरुद्धार करने वाले
४७५ ॐ कल्कि पुनरुत्थानाय नमः - सृष्टि को फिर नयी बनाने वाले
४७६ ॐ कल्कि पुनर्जागरणाय नमः - महाजागरण करने वाले
४७७ ॐ कल्कि कृतयुग-स्थापनाय नमः - सतयुग की स्थापना करने वाले
४७८ ॐ कल्कि कृतयुगेश्वराय नमः - सतयुग के स्वामी (ईश्वर)
४७९ ॐ कल्कि साधुजन-पालकाय नमः - साधुजनों का पालन करने वाले
४८० ॐ कल्कि नर नारीश्वराय नमः - नर-नारी के मालिक
४८१ ॐ कल्कि पृथ्वी भारोद्धाराय नमः - पृथ्वी का भार उतारने वाले
४८२ ॐ कल्कि धराभार-हरणाय नमः - पृथ्वी से पापों को हरने वाले
४८३ ॐ कल्कि शेषे श्वराय नमः - बचे हुए जनों को बचाने वाले
४८४ ॐ कल्कि महा-दिक्पालाय नमः - महान दिग्पाल स्वरूप
४८५ ॐ कल्कि समस्त क्षेत्रपालाय नमः - सभी क्षेत्रों का पालन करने वाले
४८६ ॐ कल्कि क्षेत्रपालेश्वराय नमः - क्षेत्रपाल देवताओं के ईष्ट देव
४८७ ॐ कल्कि भावना-भावनाय नमः - भावना से वश में आने वाले

४८८ ॐ कल्कि हृदयंगमाय नमः - हृदय तक पहुँचने वाले
४८९ ॐ कल्कि विश्वान्तर्यामिने नमः - विश्व के अर्न्तयामी
४९० ॐ कल्कि स्वप्रकाशाय नमः - अपने प्रकाश से प्रकाशित होने वाले
४९१ ॐ कल्कि प्रकाशे-श्वराय नमः - प्रकाशों के महाप्रकाश
४९२ ॐ कल्कि कलि मान मर्दनाय नमः - कलि का मान मर्दन करने वाले
४९३ ॐ कल्कि कलि विध्वंसिने नमः - कलि का विध्वंस करने वाले
४९४ ॐ कल्कि कलि रूप नाशाय नमः - कलिकाल के रूपों को नाश करने वाले
४९५ ॐ कल्कि कृत- युगाय नमः - साक्षात सतयुग के स्वरूप
४९६ ॐ कल्कि म्लेच्छान्तकाय नमः - म्लेच्छों के विनाशक
४९७ ॐ कल्कि सत-गुण-रक्षकाय नमः - सद्गुण के रक्षक
४९८ ॐ कल्कि म्लेच्छ पन्थ नाशकाय नमः - म्लेच्छता के मार्ग को नष्ट करने वाले
४९९ ॐ कल्कि भ्रष्ट-जन-नाशकाय नमः - भ्रष्टाचारी जनों के नाशक
५०० ॐ कल्कि साधुजन प्रेरकाय नमः - साधु संतों को प्रेरणा देने वाले
५०१ ॐ कल्कि सन्त जनामृताय नमः - संत जनों को अमृत देने वाले

५०२ ॐ कल्कि वेदामृताय नमः - वेदों के अमृत स्वरूप
५०३ ॐ कल्कि मन्दिर कल्प-वृक्षाय नमः - मंदिरों के लिए कल्पवृक्ष
५०४ ॐ कल्कि संजीवनी धराय नमः - संजीवनी धारण करने वाले
५०५ ॐ कल्कि अधर्मान्तकाय नमः - अधर्म को नष्ट करने वाले
५०६ ॐ कल्कि भक्तहित दर्शनाय नमः - भक्तों को दर्शन देने वाले
५०७ ॐ कल्कि संकीर्तन प्रसादाय नमः - नाम संकीर्तन से प्रसन्न होने वाले
५०८ ॐ कल्कि रणभेरी गर्जनाय नमः - युद्ध में गर्जन करने वाले
५०९ ॐ कल्कि पर्जन्यामृताय नमः - अन्नों में अमृत भरने वाले
५१० ॐ कल्कि कर्म फलदाय नमः - कर्म फल देने वाले
५११ ॐ कल्कि सिद्धि दायकाय नमः - सिद्धियाँ देने वाले
५१२ ॐ कल्कि आचार रक्षकाय नमः - सदाचार की रक्षा करने वाले
५१३ ॐ कल्कि अमृतामृताय नमः - अमृत के भी अमृत
५१४ ॐ कल्कि अवतारेश्वराय नमः - अवतारों के ईश्वर
५१५ ॐ कल्कि समुद्र मथनाय नमः - समुद्र मथन करने वाले

५१६ ॐ कल्कि उदधि-बडवानलाय नमः - समुद्र को सुखाने वाले अग्नि के समान
५१७ ॐ कल्कि नाम स्मरण प्रकटाय नमः - नामस्मरण से प्रकट होने वाले
५१८ ॐ कल्कि जगत् कारण-कारणाय नमः - जगत के कारणों के कारण
५१९ ॐ कल्कि जगती-धराय नमः - पृथ्वी धारण करने वाले
५२० ॐ कल्कि चतुर्दश भुवनेश्वराय नमः - १४ भुवनों के ईश्वर
५२१ ॐ कल्कि महोल्कापातये नमः - उल्कापात करने वाले
५२२ ॐ कल्कि भूकम्प वदनाय नमः - भूकम्प की तरह शरीर वाले
५२३ ॐ कल्कि आग्नेय वदनाय नमः - अग्नि की तरह शरीर वाले
५२४ ॐ कल्कि अर्णव-स्वरूपाय नमः - समुद्र की तरह अथाह
५२५ ॐ कल्कि घृत पाशांकुशाय नमः - पाश अंकुश धारण करने वाले
५२६ ॐ कल्कि पृथ्वी धराय नमः - पृथ्वी को धारण करने वाले
५२७ ॐ कल्कि पृथ्वीश्वराय नमः - पृथ्वी के रक्षक
५२८ ॐ कल्कि धृतराज्याय नमः - राज्यों को चलाने वाले
५२९ ॐ कल्कि सच्चिदानंदाय नमः - सत् चित आनंद स्वरुप वाले

५३० ॐ कल्कि परशुराम-तेजसे नमः - परशुराम को तेज देने वाले
५३१ ॐ कल्कि वामन-त्रिपाद-धारिणे नमः - वामन की तरह तीनों लोकों में पैर जमाने वाले
५३२ ॐ कल्कि सूर्य-शशिध्वजाय नमः - सूर्य चन्द्र जिनकी ध्वजा है
५३३ ॐ कल्कि तारा-गण-तोरणाय नमः - दृष्टि मात्र से सितारों को तोड़ने वाले
५३४ ॐ कल्कि आकाश गंगा धराय नमः - आकाश गंगा को धारण करने वाले
५३५ ॐ कल्कि तीर्थ तीर्थाय नमः - तीर्थों के महा तीर्थ
५३६ ॐ कल्कि महातीर्थंकराय नमः - महा तीर्थ के निर्माता
५३७ ॐ कल्कि तीर्थेश्वराय नमः - तीर्थों के ईश्वर
५३८ ॐ कल्कि तीर्थोद्धारकाय नमः - तीर्थों के सुधार करने वाले
५३९ ॐ कल्कि वर्णाश्रम पालकाय नमः - वर्णाश्रमों का पालन करने वाले
५४० ॐ कल्कि पुरातन-वपुषे नमः - सनातन शरीर धारण करने वाले
५४१ ॐ कल्कि सनातन स्वरुपाय नमः - सनातन स्वरूप
५४२ ॐ कल्कि बाल विनयाय नमः - बालकों की प्रार्थना सुनने वाले

५४३ ॐ कल्कि लीला धराय नमः - अनेक लीला दिखाने वाले
५४४ ॐ कल्कि योग विहारिणे नमः - योग में विचरने वाले
५४५ ॐ कल्कि ग्रह भय विदारिणे नमः - क्रूर ग्रहों के भय को मिटाने वाले
५४६ ॐ कल्कि आनन्द स्वरूपाय नमः - आनंद के स्वरूप
५४७ ॐ कल्कि भक्तजनानन्दाय नमः - भक्त जनों को आनंद देने वाले
५४८ ॐ कल्कि आनन्द नन्दाय नमः - आनंद को भी आनंद देने वाले
५४९ ॐ कल्कि पंच कोष्ठ-प्रवेशाय नमः - प्राणमय, विज्ञानमय आदि पांचों कोष्ठों में प्रवेश करने वाले
५५० ॐ कल्कि महा रामेश्वराय नमः - महान रामेश्वर
५५१ ॐ कल्कि अन्तःकरणाय नमः - अन्तःकरण में प्रवेश करने वाले
५५२ ॐ कल्कि सूक्ष्मातिसूक्ष्माय नमः - सूक्ष्म से भी सूक्ष्म
५५३ ॐ कल्कि वृहत्-वृहते नमः - बड़े से भी बड़ा
५५४ ॐ कल्कि महन्महते नमः - महान् से भी महान्
५५५ ॐ कल्कि महोज्वलाय नमः - परम उज्जवल स्वरूप वाले

५५६ ॐ कल्कि पञ्चामृत-पवित्राय नमः - पंचामृत को पवित्र करने वाले
५५७ ॐ कल्कि ध्यानेश्वराय नमः - ध्यान के ईश्वर
५५८ ॐ कल्कि गौ ब्राह्मण-हितैषिणे नमः - गौ ब्राह्मण के हितैषी
५५९ ॐ कल्कि प्रेक्षाध्यानाय नमः - सबका आत्मनिरीक्षण करने वाले
५६० ॐ कल्कि सहजयोगेश्वराय नमः - भक्तों के योगेश्वर
५६१ ॐ कल्कि योगीश्वराय नमः - योगी जनों के ईश्वर
५६२ ॐ कल्कि योग-योगाय नमः - योगों के महायोग
५६३ ॐ कल्कि मर्यादा-रक्षणाय नमः - मर्यादा के रक्षक
५६४ ॐ कल्कि शस्त्र-परन्तपाय नमः - शस्त्रों का विध्वंस कर अपने शस्त्र चलाने वाले
५६५ ॐ कल्कि दर्शन दर्शनाय नमः - दर्शनीय ज्योति स्वरूप
५६६ ॐ कल्कि पराविद्या-स्वरूपाय नमः - अध्यात्म विद्या स्वरूप
५६७ ॐ कल्कि परम्परा-रक्षकाय नमः - परम्पराओं के रक्षक
५६८ ॐ कल्कि कलि पीड़ित त्राणाय नमः - कलियुग के दुखी जनों के रक्षक
५६९ ॐ कल्कि धर्म-त्राणाय नमः - धर्म के रक्षक

५७० ॐ कल्कि अधर्म-मूल-विनाशाय नमः - अधर्म की जड़ को मिटाने वाले
५७१ ॐ कल्कि मर्यादेश्वराय नमः - मर्यादाओं के ईश्वर
५७२ ॐ कल्कि सिद्धेश्वराय नमः - सिद्ध जनों के ईश्वर
५७३ ॐ कल्कि प्रसिद्धेश्वराय नमः - इस युग के प्रसिद्ध ईश्वर
५७४ ॐ कल्कि कलि कण्ठ निग्रहाय नमः - कलि काल का गला दबाने वाले
५७५ ॐ कल्कि कलि नासा भंजनाय नमः - कलिकाल की नाक तोड़ने वाले
५७६ ॐ कल्कि कलि छेदनाय नमः - कलि को काटने वाले
५७७ ॐ कल्कि कलिकाल-मृत्यवे नमः - कलि की अकाल मृत्यु करने वाले
५७८ ॐ कल्कि कलि पाखण्ड खण्डनाय नमः - कलि के पाखण्डों का नाश करने वाले
५७९ ॐ कल्कि कलि पाखण्ड खननाय नमः - कलि के पाखण्ड को खोदने वाले
५८० ॐ कल्कि कलि विष निवारणाय नमः - कलि के विष से दूर करने वाले
५८१ ॐ कल्कि कलि कर्मोन्मूलनाय नमः - कलि के दुष्कर्मों का नाश करने वाले
५८२ ॐ कल्कि कलि कुठाराय नमः - कलि के लिये फरसा धारण करने वाले
५८३ ॐ कल्कि कलि स्थान भ्रंशनाय नमः - कलि के सभी स्थानों का नाश करने वाले

५८४ ॐ कल्कि कलि सर्वनाशाय नमः - कलि के सर्वस्व को नाश करने वाले
५८५ ॐ कल्कि कलि-रूप-महाकालाय नमः - कलि के लिए महाकाल
५८६ ॐ कल्कि कलि वंशावली समापनाय नमः - कलि के वंश को नाश करने वाले
५८७ ॐ कल्कि कलि प्राण हराय नमः - कलि के प्राण हरने वाले
५८८ ॐ कल्कि धर्म-ध्वजारोहणाय नमः - धर्म की पताका फहराने वाले
५८९ ॐ कल्कि धर्म-हिमालयाय नमः - धर्म में हिमालय से भी ऊँचे
५९० ॐ कल्कि यज्ञ-प्रयागाय नमः - यज्ञों के प्रयाग तीर्थ
५९१ ॐ कल्कि यज्ञेश्वराय नमः - यज्ञों के प्रधान ईश्वर
५९२ ॐ कल्कि धर्म-वृन्दावनाय नमः - धर्म के लिये तुलसी वन
५९३ ॐ कल्कि सदाचार-बद्रीनाथाय नमः - सदाचार के लिये बद्रीनाथ
५९४ ॐ कल्कि कल्याण-केदारनाथाय नमः - कल्याण के लिये केदारनाथ
५९५ ॐ कल्कि महा ज्योतिर्लिंगाय नमः - महान ज्योर्तिलिंग
५९६ ॐ कल्कि एकादश रुद्र रूपाय नमः - ११ रुद्र एक साथ रखने वाले
५९७ ॐ कल्कि धरा विश्वनाथाय नमः - धरती के विश्वनाथ

५९८ ॐ कल्कि विश्व ज्योतिर्लिंगाय नमः - विश्व के प्रकाश स्तम्भ स्वरुप
५९९ ॐ कल्कि महा-रुद्रात्मने नमः - महारुद्ररूप
६०० ॐ कल्कि महा-जगन्नाथाय नमः - महान् जगत् के नाथ
६०१ ॐ कल्कि वृहत्-द्वारिकेश्वराय नमः - महान द्वारकाधीश
६०२ ॐ कल्कि धर्म-द्वारेश्वराय नमः - धर्म के मुख्य द्वार
६०३ ॐ कल्कि गोकुल संरक्षकाय नमः - गोकुल के संरक्षक
६०४ ॐ कल्कि धर्म-गंगाधराय नमः - धर्म की गंगा बहाने वाले
६०५ ॐ कल्कि पावन-पावनाय नमः - पावन से भी पावन
६०६ ॐ कल्कि मानस-मणये नमः - मन के मणि
६०७ ॐ कल्कि गंगा-सागराय नमः - गंगा के सागर
६०८ ॐ कल्कि महा-सागराय नमः - महासागर
६०९ ॐ कल्कि धर्मवंश-पालकाय नमः - धर्मवंश के पालक
६१० ॐ कल्कि दशधर्म-लक्षणाय नमः - दस धर्म सनातन रूप (धर्म के १० लक्षण वाले)
६११ ॐ कल्कि वेंकटेश्वराय नमः - साक्षात् वेंकटेश्वर स्वरूप

६१२ ॐ कल्कि विकट-विराटरूपाय नमः - विकट और विराट स्वरूप
६१३ ॐ कल्कि संगीत-हासाय नमः - संगीत की तरह हँसमुख
६१४ ॐ कल्कि जीवन संगीताय नमः - जीवन के संगीत
६१५ ॐ कल्कि महा-रास-नृत्याय नमः - महारास-नृत्य करने वाले
६१६ ॐ कल्कि महाताण्डवाय नमः - महाताण्डव नृत्य करने वाले
६१७ ॐ कल्कि ताण्डवेश्वराय नमः - ताण्डव के भी ईश्वर
६१८ ॐ कल्कि म्लेच्छ मारणोत्सवाय नमः - म्लेच्छों का वध कर उत्सव करने वाले
६१९ ॐ कल्कि दुष्ट-वध-समारोहाय नमः - दुष्ट वध के बाद मरण श्राद्ध करने वाले
६२० ॐ कल्कि धर्म-संगमाय नमः - धर्म के संगम
६२१ ॐ कल्कि धर्म-धुरी-धारणाय नमः - धर्म की धुरी स्थापित करने वाले
६२२ ॐ कल्कि दिव्य शरीराय नमः - दिव्य शरीर वाले
६२३ ॐ कल्कि दिव्यावतराय नमः - दिव्य अवतार
६२४ ॐ कल्कि दिव्य-स्वरूपाय नमः - दिव्य स्वरूप
६२५ ॐ कल्कि दिव्य-कर्मणे नमः - शुभ कर्मों के स्वामी

६२६ ॐ कल्कि दिव्यात्मने नमः - दिव्य आत्माओं के महा तेज
६२७ ॐ कल्कि दिव्य-महादेवाय नमः - देवाधिदेव महादेव स्वरूप
६२८ ॐ कल्कि दिव्य चक्षुषे नमः - दिव्य नेत्रों वाले
६२९ ॐ कल्कि दिव्य-श्रोत्राय नमः - दिव्य कानों वाले
६३० ॐ कल्कि दिव्य-चरणाय नमः - दिव्य चरण वाले
६३१ ॐ कल्कि दिव्य-वर्णाय नमः - दिव्य आभा वाले
६३२ ॐ कल्कि दिव्य-मुरलीधराय नमः - दिव्य वंशी वादक
६३३ ॐ कल्कि दिव्यांगुष्ठाय नमः - दिव्य चरणों के अंगूठे वाले
६३४ ॐ कल्कि दिव्य-गुणाय नमः - दिव्य गुणों वाले
६३५ ॐ कल्कि दिव्येश्वराय नमः - दिव्य ईश्वर
६३६ ॐ कल्कि दिव्य दीपाय नमः - दिव्य दीपक
६३७ ॐ कल्कि दिव्याधराय नमः - दिव्य ओठों वाले
६३८ ॐ कल्कि दिव्य दिव्याय नमः - दिव्यों के भी दिव्य
६३९ ॐ कल्कि दिव्य गतये नमः - दिव्य गति वाले

६४० ॐ कल्कि दिव्य जंघाय नमः - दिव्य जंघा वाले
६४१ ॐ कल्कि दिव्य करतलाय नमः - दिव्य हथेली वाले
६४२ ॐ कल्कि दिव्य पादतलाय नमः - दिव्य पादतल वाले
६४३ ॐ कल्कि दिव्याहाराय नमः - दिव्य भोजन करने वाले
६४४ ॐ कल्कि दिव्य पृष्ठाय नमः - दिव्य पीठ वाले
६४५ ॐ कल्कि दिव्योदराय नमः - दिव्य पेट वाले
६४६ ॐ कल्कि दिव्य पार्श्वाय नमः - दिव्य अगल-बगल वाले
६४७ ॐ कल्कि दिव्य रोमाय नमः - दिव्य रोम वाले
६४८ ॐ कल्कि दिव्य वाहवे नमः - दिव्य हाथों वाले
६४९ ॐ कल्कि दिव्य-कटिधराय नमः - दिव्य कमर वाले
६५० ॐ कल्कि दिव्यास्त्राय नमः - दिव्य अस्त्र वाले
६५१ ॐ कल्कि दिव्य कृपाण धराय नमः - दिव्य तलवार धारण करने वाले
६५२ ॐ कल्कि दिव्याश्वाय नमः - दिव्य वाहन घोड़े वाले
६५३ ॐ कल्कि दिव्य शिरसे नमः - दिव्य शीश वाले

६५४ ॐ कल्कि दिव्य नखाय नमः - दिव्य नखों वाले
६५५ ॐ कल्कि दिव्य गुह्याय नमः - दिव्य गोपनीय तत्त्व वाले
६५६ ॐ कल्कि दिव्य आशीर्वादाय नमः - दिव्य आशीर्वाद देने वाले
६५७ ॐ कल्कि दिव्य वचनाय नमः - दिव्य वचनों वाले
६५८ ॐ कल्कि दिव्यात्मने नमः - दिव्य आत्मा वाले (परमात्मा)
६५९ ॐ कल्कि महा दिव्याय नमः - अवर्णनीय शोभा वाले
६६० ॐ कल्कि दिव्य करुणा कराय नमः - दिव्य करुणा निधान
६६१ ॐ कल्कि दिव्य वसनाय नमः - दिव्य वस्त्रधारी
६६२ ॐ कल्कि दिव्यायुधाय नमः - दिव्य हथियार रखने वाले
६६३ ॐ कल्कि दिव्य चरण रजसे नमः - दिव्य चरण रज वाले
६६४ ॐ कल्कि दिव्य महाश्वासाय नमः - दिव्य श्वांस वाले
६६५ ॐ कल्कि दिव्य हासाय नमः - दिव्य हँसने वाले
६६६ ॐ कल्कि दिव्य शिखाधराय नमः - दिव्य चोटी रखने वाले
६६७ ॐ कल्कि दिव्येश्वराय नमः - दिव्य ईश्वर

६६८ ॐ कल्कि दिव्य वज्रांगाय नमः - दिव्य वज्र धारण करने वाले
६६९ ॐ कल्कि दिव्य प्रत्यंगाय नमः - प्रत्येक अंग दिव्य वाले
६७० ॐ कल्कि दिव्यान्तः करणाय नमः - दिव्य अन्तःकरण वाले
६७१ ॐ कल्कि दिव्य-भावाय नमः - दिव्य भावना वाले
६७२ ॐ कल्कि दिव्य-कृपाणाय नमः - दिव्य कृपाण धारण करने वाले
६७३ ॐ कल्कि सर्वांग दिव्याय नमः - सभी दिव्य अंगों वाले
६७४ ॐ कल्कि करूणा-मूर्तये नमः - करुणा की मूर्ति
६७५ ॐ कल्कि करुणा-कराय नमः - करुणा करने वाले
६७६ ॐ कल्कि करुणा-रुपाय नमः - करुणा स्वरुप वाले
६७७ ॐ कल्कि अहिंसा-पक्षधराय नमः - अहिंसा के पक्षधर
६७८ ॐ कल्कि हिंसा-भयंकराय नमः - भयंकर हिंसा वाले
६७९ ॐ कल्कि हिंसक-सिंहाय नमः - सिंह के समान हिंसक
६८० ॐ कल्कि दिव्य स्मृतये नमः - दिव्य स्मरण शक्ति रखने वाले
६८१ ॐ कल्कि दिव्य-देव-प्रमाणाय नमः - दिव्य देवतागणों से मान्य

६८२ ॐ कल्कि दिव्य-धर्म-शास्त्राय नमः - दिव्य धर्म शास्त्र स्वरूप
६८३ ॐ कल्कि दिव्य-रत्ना-कराय नमः - दिव्य रत्न स्वरूप
६८४ ॐ कल्कि दिव्य सुधांशवे नमः - दिव्य चन्द्रकिरण की भांति
६८५ ॐ कल्कि दिव्यांशुमालिने नमः - दिव्य सूर्य के समान
६८६ ॐ कल्कि दिव्य वेघसे नमः - दिव्य ब्रह्मा के समान
६८७ ॐ कल्कि दिव्योरसे नमः - दिव्य वक्षस्थल वाले
६८८ ॐ कल्कि दिव्य सोमनाथाय नमः - दिव्य चन्द्रमा के स्वामी
६८९ ॐ कल्कि दिव्य-कल्पवृक्षाय नमः - दिव्य कल्पवृक्ष के स्वामी
६९० ॐ कल्कि दिव्य वटवृक्षाय नमः - दिव्य वटवृक्ष के स्वामी
६९१ ॐ कल्कि दिव्य वाणिज्याय नमः - दिव्य व्यापार वाले
६९२ ॐ कल्कि दिव्य ग्रीवाय नमः - दिव्य गर्दन वाले
६९३ ॐ कल्कि दिव्य-कण्ठाभरणाय नमः - दिव्य कण्ठ आभूषण वाले
६९४ ॐ कल्कि दिव्य-कुक्षिधराय नमः - दिव्य कमर वाले
६९५ ॐ कल्कि दिव्य महास्कन्धाय नमः - दिव्य कन्धों वाले

६९६ ॐ कल्कि दिव्य प्रकाश स्तम्भाय नमः - दिव्य प्रकाश वाले
६९७ ॐ कल्कि महादिव्य हृदाय नमः - दिव्य महा हृदय वाले
६९८ ॐ कल्कि दिव्यांगाय नमः - दिव्य अंग-वस्त्र वाले
६९९ ॐ कल्कि दिव्य प्रशमाय नमः - दिव्य शांति देने वाले
७०० ॐ कल्कि दिव्य मूलाधाराय नमः - दिव्य शरीर के मूलाधार को धारण करने वाले
७०१ ॐ कल्कि दिव्य स्थानाय नमः - दिव्य मंदिर वाले
७०२ ॐ कल्कि दिव्य पर्जन्याय नमः - दिव्य वर्षा करने वाले
७०३ ॐ कल्कि दिव्य नवदुर्गात्मकाय नमः - दिव्य नवदुर्गा की शक्ति वाले
७०४ ॐ कल्कि दिव्य काली रुपाय नमः - दिव्य काली रुप धारी
७०५ ॐ कल्कि दिव्य चामुण्डा रूपाय नमः - दिव्य चामुंडा रूप धारी
७०६ ॐ कल्कि दिव्य ज्वाला-रूपाय नमः - दिव्य ज्वाला रूप धारी
७०७ ॐ कल्कि दिव्य सूर्य-सहस्त्राय नमः - दिव्य हजारों सूर्य वाले
७०८ ॐ कल्कि दिव्य-वेदाय नमः - दिव्य वेदों के ज्ञाता
७०९ ॐ कल्कि विश्वतो मुखाय नमः - चारों दिशाओं की तरफ मुख वाले

७१० ॐ कल्कि सर्वतो भद्राय नमः - चौतरफा कल्याण करने वाले
७११ ॐ कल्कि अष्ट-चक्र-धराय नमः - दिव्य शरीर के आठ चक्रधारी
७१२ ॐ कल्कि धर्म-चक्र-धराय नमः - धर्म चक्र चलाने वाले
७१३ ॐ कल्कि धर्म-भूषणाय नमः - धर्म के आभूषण पहनने वाले
७१४ ॐ कल्कि धर्म-श्रीविभूषिताय नमः - धर्म लक्ष्मी से विभूषित
७१५ ॐ कल्कि धर्मालंकारणाय नमः - धर्म से अलंकृत
७१६ ॐ कल्कि धर्म-धारणाध्यानाय नमः - धर्म का ध्यान रखने वाले
७१७ ॐ कल्कि धर्म-धराभरणाय नमः - धर्म भूमि का पालन करने वाले
७१८ ॐ कल्कि धर्म-महासुखाय नमः - धर्म को सुख देने वाले
७१९ ॐ कल्कि धर्म-राज्यपालाय नमः - धर्म राज्य के राजेश्वर
७२० ॐ कल्कि धर्मेश्वराय नमः - धर्म के ईश्वर
७२१ ॐ कल्कि धर्म-हितैषिणे नमः - धर्म के हितैषी
७२२ ॐ कल्कि धार्मिक जन पालाय नमः - धार्मिक जनों के रक्षक
७२३ ॐ कल्कि धर्म-विद्याधराय नमः - धर्म विद्या के धारक

७२४ ॐ कल्कि धर्मोत्तमाय नमः - धर्म के उत्तम पुरुष
७२५ ॐ कल्कि धर्म-ध्रुवाय नमः - धर्म का निर्णय करने वाले
७२६ ॐ कल्कि धर्म-सागराय नमः - धर्म के समुद्र
७२७ ॐ कल्कि धर्म-प्रवाहाय नमः - धर्म के प्रवाह स्त्रोत
७२८ ॐ कल्कि धर्म सूर्याय नमः - धर्म के सूर्य
७२९ ॐ कल्कि धर्म-सोमाय नमः - धर्म के चन्द्रमा
७३० ॐ कल्कि धर्म-मंगलाय नमः - धर्म के मंगल रूप
७३१ ॐ कल्कि धर्म-बुधाय नमः - धर्म के बुद्धि रुप
७३२ ॐ कल्कि धर्म-बृहस्पतये नमः - धर्म के गुरु
७३३ ॐ कल्कि धर्म-शुक्राय नमः - धर्म के धुरंधर शुक्र
७३४ ॐ कल्कि धर्म-ग्राहाय नमः - धर्म को ग्रहण करने वाले
७३५ ॐ कल्कि कलि पीड़क क्रूर ग्रहाय नमः - कलि के लिये क्रूर ग्रह
७३६ ॐ कल्कि कलि पीडनाय नमः - कलि को दुःख पहुँचाने वाले
७३७ ॐ कल्कि कलि त्रास हराय नमः - कलि से उत्पन्न भय को नाश करने वाले

७३८ ॐ कल्कि कलि क्रूर वधाय नमः - कलि का क्रूर वध करने वाले
७३९ ॐ कल्कि विश्व-चक्रमणाय नमः - विश्व की परिक्रमा करने वाले
७४० ॐ कल्कि भवभय-दारणाय नमः - संसार के भय दूर करने वाले
७४१ ॐ कल्कि नवकंज-लोचनाय नमः - नए कोमल कमल नेत्र वाले
७४२ ॐ कल्कि धर्म-सरोरुहाय नमः - धर्म के कमल स्वरूप
७४३ ॐ कल्कि भक्तजन-पंकजाय नमः - भक्तजनों के कमल स्वरुप
७४४ ॐ कल्कि कृशानु-कोपाय नमः - अग्नि की तरह कोप वाले
७४५ ॐ कल्कि भव्य हरद्वाराय नमः - सर्वोत्तम ईश्वरीय द्वार
७४६ ॐ कल्कि भव्य रूपाय नमः - भव्य स्वरूप वाले
७४७ ॐ कल्कि भव्य गतिचलाय नमः - भव्य गति वाले
७४८ ॐ कल्कि महा-शालिग्रामाय नमः - महान शालिग्राम रूप वाले
७४९ ॐ कल्कि भव्य-स्वराय नमः - भव्य ध्वनि वाले
७५० ॐ कल्कि भव्य-मूर्तये नमः - भव्य मूर्ति वाले
७५१ ॐ कल्कि भव्य-भूतनाथाय नमः - भव्य संसारी प्राणियों के स्वामी

७५२ ॐ कल्कि भव्य-शक्तिधराय नमः - भव्य शक्ति धारण करने वाले
७५३ ॐ कल्कि भव्य-शिरोरुहाय नमः - भव्य केशधारी
७५४ ॐ कल्कि भव्य-दिव्यात्मने नमः - भव्य दिव्य परमात्मा
७५५ ॐ कल्कि भव्य-दिव्यस्वरुपाय नमः - भव्य दिव्य स्वरुप
७५६ ॐ कल्कि भव्य-सुरेन्द्राय नमः - भव्य देवताओं के ईष्ट देव
७५७ ॐ कल्कि भव्य-दिव्यासनाय नमः - भव्य दिव्य आसन पर विराजमान रहने वाले
७५८ ॐ कल्कि भव्य-दिव्य दर्शनाय नमः - भव्य दिव्य दर्शन देने वाले
७५९ ॐ कल्कि भव्य सन्मार्गाय नमः - सद्मार्ग पर चलाने वाले
७६० ॐ कल्कि भव्य भव्याय नमः - भव्यता के भी भव्य
७६१ ॐ कल्कि भस्मीकृत कलये नमः - कलि काल को भस्म करने वाले
७६२ ॐ कल्कि मर्दित कलि तनवे नमः - कलि का शरीर मसलने वाले
७६३ ॐ कल्कि कलि शोणित हस्ताय नमः - जिनके हाथ कलि के रक्त से भरे हैं
७६४ ॐ कल्कि कलि भस्मासुर भस्माय नमः - भस्मासुर के समान कलि को भस्म करने वाले

७६५ ॐ कल्कि कलि कालानल रूपाय नमः - कलि के कालाग्नि रूप वाले
७६६ ॐ कल्कि कलि भस्म धराय नमः - कलि की भस्म धारण करने वाले
७६७ ॐ कल्कि देव-परिधानाय नमः - दिव्य पहनावा पहनने वाले
७६८ ॐ कल्कि धर्म-समाधानाय नमः - धर्मों का समाधान कराने वाले
७६९ ॐ कल्कि धर्म-विजयाय नमः - धर्म की विजय कराने वाले
७७० ॐ कल्कि अधर्म पराजयाय नमः - अधर्म को हराने वाले
७७१ ॐ कल्कि धर्म-शिवाय नमः - धर्म का कल्याण करने वाले
७७२ ॐ कल्कि सत्यं शिवं सुन्दराय नमः - सत्य, शिव और सुन्दर स्वरुप वाले
७७३ ॐ कल्कि यम पाश धराय नमः - यमराज के पाश को लिये हुए
७७४ ॐ कल्कि काली कराल खड्गाय नमः - काली के विकराल खड्ग को लिये हुए
७७५ ॐ कल्कि भक्ति भक्त भगवते नमः - भक्ति एवं भक्तों के भगवान
७७६ ॐ कल्कि मर्मज्ञाय नमः - मर्मों के तत्व को जानने वाले
७७७ ॐ कल्कि रहस्यानां-रहस्याय नमः - रहस्यों के रहस्य को जानने वाले
७७८ ॐ कल्कि नमो नारायणाय नमः - प्रणाम योग्य साक्षात नारायण

७७९ ॐ कल्कि एक रूपाय नमः - एक रूप वाले
७८० ॐ कल्कि विप्रेश्वराय नमः - ब्राह्मणों के ईश्वर
७८१ ॐ कल्कि ब्रह्म-तनु-धारिणे नमः - ब्रह्म शरीर वाले
७८२ ॐ कल्कि कलिमल विनाशाय नमः - कलि की गंदगी का नाश करने वाले
७८३ ॐ कल्कि कलिपंक हराय नमः - कलियुग की कीचड़ को दूर करने वाले
७८४ ॐ कल्कि भक्त पंकजाय नमः - भक्तों के कमल
७८५ ॐ कल्कि कुसुमित-धर्म पंकजाय नमः - धर्म कमल खिलाने वाले
७८६ ॐ कल्कि धर्म पल्लवाय नमः - धर्म को हरा भरा रखने वाले
७८७ ॐ कल्कि भक्तजन कुसुमाय नमः - भक्तों के खिले पुष्परूप
७८८ ॐ कल्कि अकारण-करुणाकराय नमः - बिना कारण करूणा, दया करने वाले
७८९ ॐ कल्कि अहैतुकी कृपाकराय नमः - अहैतुकी कृपा करने वाले
७९० ॐ कल्कि गगनोल्का-पाताय नमः - आकाश के उल्कापात समान
७९१ ॐ कल्कि कलि मारण धूम केतवे नमः - कलि काल के लिये धूम केतु के समान
७९२ ॐ कल्कि भक्तजन भास्कराय नमः - भक्तजनों के सूर्य

७९३ ॐ कल्कि भक्ति कमल सरोजाय नमः - भक्तों के कमल पराग
७९४ ॐ कल्कि भक्त कमल भानवे नमः - भक्त कमलों के सूर्य के समान
७९५ ॐ कल्कि गजेन्द्र मोक्षाय नमः - गजेन्द्र को मोक्ष देने वाले
७९६ ॐ कल्कि धरणीधर कच्छपाय नमः - पृथ्वी धारण करने के लिये कच्छप अवतार लेने वाले
७९७ ॐ कल्कि महा-श्वासाय नमः - विराट श्वांस वाले
७९८ ॐ कल्कि महाविश्वासाय नमः - विश्वास दिलाने वाले
७९९ ॐ कल्कि कलि तिमिर-विध्वंसाय नमः - कलि के अंधेरे को हटाने वाले
८०० ॐ कल्कि कलि भयंकर शत्रवे नमः - कलि काल के भयंकर शत्रु
८०१ ॐ कल्कि पाठपूजा-प्रियाय नमः - पाठ पूजा से प्रसन्न होने वाले
८०२ ॐ कल्कि धर्म कर्म-प्रियाय नमः - धर्म कर्म को प्रिय मानने वाले
८०३ ॐ कल्कि भक्ति विभोराय नमः - भक्ति से विभोर होने वाले
८०४ ॐ कल्कि ज्ञान-ग्राह्याय नमः - ज्ञान द्वारा जानने योग्य
८०५ ॐ कल्कि ज्ञान स्वरूपाय नमः - ज्ञान के स्वरूप

८०६ ॐ कल्कि चतुर्वेदाय नमः - चारों वेदों के प्राण स्वरूप
८०७ ॐ कल्कि सर्व-शास्त्राय नमः - सब शास्त्रों के प्राण
८०८ ॐ कल्कि लीलाधराय नमः - लीला दिखाने वाले
८०९ ॐ कल्कि माया-धराय नमः - अपनी माया दिखाने वाले
८१० ॐ कल्कि लीला-योगेश्वराय नमः - लीला के योगेश्वर
८११ ॐ कल्कि ॐ स्वाहाकाराय नमः - स्वाहा के आकार वाले
८१२ ॐ कल्कि महानुष्ठानाय नमः - धार्मिक अनुष्ठानों के जागृत स्वरूप
८१३ ॐ कल्कि विश्व-परिब्राजकाय नमः - विश्व में भ्रमण करने वाले
८१४ ॐ कल्कि भक्ति मकरन्दाय नमः - भक्ति की सुगंधी देने वाले
८१५ ॐ कल्कि भागवत धर्माय नमः - भागवत धर्म के स्वरूप
८१६ ॐ कल्कि महा-भारताय नमः - महाभारत के विधाता
८१७ ॐ कल्कि विश्व प्रलयाय नमः - विश्व के प्रलय कर्ता
८१८ ॐ कल्कि विनाश लीला ताण्डवाय नमः - विनाश के लिये ताण्डव करने वाले
८१९ ॐ कल्कि कृतयुग सूत्र पाताय नमः - सतयुग प्रारम्भ करने वाले

८२० ॐ कल्कि महा शक्ति पाताय नमः - महाशक्तिपात करने वाले
८२१ ॐ कल्कि धर्म-महाभाष्याय नमः - धर्म के महाभाष्य
८२२ ॐ कल्कि हस्त-भविष्याय नमः - हाथ में लिखे भविष्य के स्वामी
८२३ ॐ कल्कि यम हस्ताय नमः - जिनके हाथ में यमराज है
८२४ ॐ कल्कि महायमाय नमः - यमराज के प्रशासक
८२५ ॐ कल्कि महा शक्तिकर्षणाय नमः - सब शक्तियों को खींचने वाले
८२६ ॐ कल्कि विकर्षणाय नमः - विश्व को आकर्षण देने वाले
८२७ ॐ कल्कि शत्रु-कुठाराय नमः - शत्रुओं के लिये फरसे के समान
८२८ ॐ कल्कि सूर्य-रश्मि-प्रग्रहाय नमः - सूर्य की किरणें उनके घोड़े की लगाम है
८२९ ॐ कल्कि चंद्र सूर्य जनकाय नमः - चन्द्रमा, सूर्य के पिता
८३० ॐ कल्कि सृष्टि-सर्जनाय नमः - सृष्टि की रचना करने वाले
८३१ ॐ कल्कि विसर्जनाय नमः - सृष्टि को विलीन करने वाले
८३२ ॐ कल्कि कलि चिन्ता करणाय नमः - कलि काल को चिन्ता देने वाले
८३३ ॐ कल्कि भक्त चिन्तनाय नमः - भक्तों की चिन्ता रखने वाले

८३४ ॐ कल्कि महा विभूतये नमः - सब ऐश्वर्यों के ऐश्वर्य
८३५ ॐ कल्कि कलि निमित्तावताराय नमः - कलि नाश के लिये अवतार धारण करने वाले
८३६ ॐ कल्कि महाशौचाय नमः - कलि की गंदगी को शुद्ध करने वाले
८३७ ॐ कल्कि कलि अन्त्येष्टये नमः - कलि की अन्त्येष्टि करने वाले
८३८ ॐ कल्कि आतंकान्ताय नमः - कलियुग के आतंक को मिटाने वाले
८३९ ॐ कल्कि भक्त महाप्राणाय नमः - भक्तों के जीवन दाता
८४० ॐ कल्कि विश्व महारामाय नमः - विश्व को शांति-आराम देने वाले
८४१ ॐ कल्कि भक्त स्वामिने नमः - भक्तों के स्वामी
८४२ ॐ कल्कि कलि प्रहरणाय नमः - कलि के प्रभाव को हरने वाले
८४३ ॐ कल्कि कलि कुलांगाराय नमः - कलि वंश के लिये अंगारे के समान
८४४ ॐ कल्कि देवलोक परिवर्तनाय नमः - देवलोक को बदल देने वाले
८४५ ॐ कल्कि आवाहनाय नमः - बुलाने पर प्रकट होने वाले
८४६ ॐ कल्कि शंखनादाय नमः - शंखनाद करने वाले

८४७ ॐ कल्कि विनाश-आमंत्रणाय नमः - विनाश के आमंत्रण
८४८ ॐ कल्कि महामंत्रणाय नमः - मंत्रों के भी महामंत्र
८४९ ॐ कल्कि सुख शक्ति सागराय नमः - सुख और शक्ति के महासमुद्र
८५० ॐ कल्कि प्रेम प्रवर्धनाय नमः - प्रेम को बढ़ाने वाले
८५१ ॐ कल्कि भक्तिरसामृताय नमः - भक्ति रस में अमृत देने वाले
८५२ ॐ कल्कि सूर्य प्रकाशाय नमः - सूर्य को प्रकाश देने वाले
८५३ ॐ कल्कि प्रलय सूर्याय नमः - प्रलयकालीन सूर्य को तेज देने वाले
८५४ ॐ कल्कि समुद्र-संप्लवाय नमः - समुद्र की सीमा तोड़ने वाले
८५५ ॐ कल्कि सप्त समुद्र जलाशायाय नमः - सातों समुद्र के जल स्वरूप
८५६ ॐ कल्कि सप्तद्वीप प्रशासनाय नमः - सातों द्वीपों के शासन कर्ता
८५७ ॐ कल्कि त्रिलोक प्रशासनाय नमः - तीनों लोकों के प्रशासक
८५८ ॐ कल्कि अनुशासनाय नमः - अनुशासन रखने वाले
८५९ ॐ कल्कि कलि काल कण्टकाय नमः - कलियुग के लिये काँटे बिछाने वाले
८६० ॐ कल्कि भक्त-संकट-मोचनाय नमः - भक्तों के संकटों को हरण करने वाले

८६१ ॐ कल्कि भक्त सम्बन्धाय नमः - भक्तों से सम्बन्ध रखने वाले
८६२ ॐ कल्कि महापुराणाय नमः - पुराणों के भी महापुराण
८६३ ॐ कल्कि इतिहास प्रवर्तकाय नमः - नया इतिहास रचने वाले
८६४ ॐ कल्कि भक्त मानस हंसाय नमः - भक्तों के मन के हंस स्वरूप
८६५ ॐ कल्कि अवधूताय नमः - पक्षपात रहित अवधूत स्वरूप
८६६ ॐ कल्कि परमहंसाय नमः - परमहंस स्वभाव
८६७ ॐ कल्कि महाराजाधिराजाय नमः - महाराजाओं के महाराजा
८६८ ॐ कल्कि राज-राजेश्वर-चक्र-वर्तिने नमः - सब राज्यों के विश्व चक्रवर्ती राजा
८६९ ॐ कल्कि विधर्मी-नाशनाय नमः - विधर्मियों का नाश करने वाले
८७० ॐ कल्कि स्वधर्म-स्वस्थाय नमः - सनातन धर्म की व्यवस्था बनाने वाले
८७१ ॐ कल्कि कलि रोगहराय नमः - कलिकालरूपी रोग को दूर करने वाले
८७२ ॐ कल्कि आधि-व्याधि नाशिने नमः - मन के शरीर के रोग नष्ट करने वाले
८७३ ॐ कल्कि कलि वितण्डादण्डाय नमः - कलि के प्रभाव में धर्म का नाश करने वालों को दण्ड देनेवाले

८७४ ॐ कल्कि कलि वाद खण्डनाय नमः - कलिकाल के विवाद सुलझाने वाले
८७५ ॐ कल्कि प्रमर्दनाय नमः - दैत्यों का मर्दन करने वाले
८७६ ॐ कल्कि वैद्यानां वैद्याय नमः - वैद्यों के भी वैद्य
८७७ ॐ कल्कि महा-चेष्टाय नमः - महान चेष्टा करने वाले
८७८ ॐ कल्कि प्रचेतसे नमः - चेतना जगाने वाले
८७९ ॐ कल्कि प्रजापतये नमः - प्रजाओं के पति
८८० ॐ कल्कि सर्वतंत्र स्वतंत्राय नमः - सर्व तंत्र स्वतंत्र स्वरूप
८८१ ॐ कल्कि तंत्र महा तंत्राय नमः - तंत्र विद्या के महा तंत्र ज्ञाता
८८२ ॐ कल्कि महा-रसायनाय नमः - महान रसायन स्वरूप
८८३ ॐ कल्कि रस-रासेश्वराय नमः - रस और रास के ईश्वर
८८४ ॐ कल्कि महा-पार-दाय नमः - भवसागर पार कराने वाले
८८५ ॐ कल्कि औषधि राजाय नमः - औषधियों में गुण डालने वाले
८८६ ॐ कल्कि महौषधि धात्रे नमः - महौषधियों के स्वामी
८८७ ॐ कल्कि वनस्पतीश्वराय नमः - वनस्पतीयों के ईश्वर

८८८ ॐ कल्कि कर्मलेपनिवर्तकाय नमः - बुरे कर्मों का नाश करने वाले
८८९ ॐ कल्कि धर्म-नाथाय नमः - धर्म के नाथ
८९० ॐ कल्कि धर्म-सख्ये नमः - धर्म के सखा
८९१ ॐ कल्कि अधर्म-रिपवे नमः - अधर्म के शत्रु
८९२ ॐ कल्कि वसुधराय नमः - पृथ्वी की सारी सम्पदा को धारण करने वाले
८९३ ॐ कल्कि गौवंश रक्षकाय नमः - गौवंश की रक्षा करने वाले
८९४ ॐ कल्कि आर्य-देवाय नमः - आर्यों के देवता, प्राचीन सभ्यताओं के स्वामी
८९५ ॐ कल्कि धर्म-व्रताय नमः - धर्म व्रत के स्वामी
८९६ ॐ कल्कि कलि नष्ट कराय नमः - कलि का नाश करने वाले
८९७ ॐ कल्कि ज्ञानावताराय नमः - ज्ञान के अवतार
८९८ ॐ कल्कि भक्त्यावताराय नमः - भक्ति के अवतार
८९९ ॐ कल्कि साधना-साध्याय नमः - साधना से सिद्ध होने वाले
९०० ॐ कल्कि मन्वन्तराय नमः - नए (मन्वन्तर) के जन्मदाता
९०१ ॐ कल्कि युगादि-प्रवर्तकाय नमः - युगों के प्रवर्तक

९०२ ॐ कल्कि अशुभ-हननाय नमः - अशुभ के नाशक
९०३ ॐ कल्कि लाभाय नमः - लाभों के बड़े लाभ
९०४ ॐ कल्कि बृहस्पति गुरवे नमः - बृहस्पति के गुरु
९०५ ॐ कल्कि गुरुणां-गुरुवे नमः - गुरुओं के जगद्गुरु
९०६ ॐ कल्कि बालमुकुन्दाय नमः - बालमुकुन्द (बालक स्वरूप)
९०७ ॐ कल्कि लक्ष्मी प्राणेशाय नमः - लक्ष्मी के नियंत्रक
९०८ ॐ कल्कि शुभाय नमः - शुभ मूर्ति
९०९ ॐ कल्कि कलिकर्म ध्वंसनाय नमः - कलि कर्मों के विनाशक
९१० ॐ कल्कि कलिभाव-तोलकाय नमः - कलि की पहचान करने वाले
९११ ॐ कल्कि पंक्ति-भेद-परिचयाय नमः - पंक्तिभेद के जानकार
९१२ ॐ कल्कि महान्तर्यामिने नमः - महान अंतर्यामी
९१३ ॐ कल्कि भक्तान्तः करणाय नमः - भक्तों के अन्तःकरण की बातों को जानने वाले
९१४ ॐ कल्कि भक्त-हित-चिन्तनाय नमः - भक्तों के हितचिंतक
९१५ ॐ कल्कि सर्व-भूत-हिताय नमः - सब प्राणियों का हित करने वाले

९१६ ॐ कल्कि उत्तमोत्तमाय नमः - श्रेष्ठों के श्रेष्ठ
९१७ ॐ कल्कि परात्पर परमात्मने नमः - परात्पर परमात्मा
९१८ ॐ कल्कि धर्म-मित्राय नमः - धार्मिकों के मित्र
९१९ ॐ कल्कि चरित्र-परिचयाय नमः - सबके चरित्रों से परिचित
९२० ॐ कल्कि विचित्र-चरित्राय नमः - अद्‌भुत चरित्र वाले
९२१ ॐ कल्कि जम्बू-द्वीपेश्वराय नमः - जम्बूद्वीप के परमेश्वर
९२२ ॐ कल्कि ब्रह्मा-वर्ताय नमः - ब्रह्मावर्त के ईश्वर, ब्रह्माण्ड के मालिक
९२३ ॐ कल्कि आर्या-वर्ताय नमः - आर्यावर्त के ईश्वर
९२४ ॐ कल्कि दैवी-सम्पत्-प्रवर्तनाय नमः - दैवी सम्पदा के संचालक
९२५ ॐ कल्कि आसुरी शक्ति शमनाय नमः - आसुरी शक्ति के नाशक
९२६ ॐ कल्कि दुर्दैव नाशकाय नमः - दुर्भाग्य को मिटाने वाले
९२७ ॐ कल्कि सौभाग्याय नमः - सौभाग्य को देने वाले
९२८ ॐ कल्कि भाग्याधिपतये नमः - भाग्य के स्वामी
९२९ ॐ कल्कि महा-ज्योतिषे नमः - भविष्य के महाज्योतिषी

९३० ॐ कल्कि ज्योतिर्मय शरीराय नमः - ज्योति स्वरूप शरीर वाले
९३१ ॐ कल्कि ज्योतिस्तत्व-धराय नमः - ज्योति तत्व को धारण करने वाले
९३२ ॐ कल्कि ज्योतिश्चक्रधराय नमः - ज्योति के चक्रधारी स्वरूप
९३३ ॐ कल्कि नक्षत्र-राशि-नियंत्रणाय नमः - नक्षत्रों राशियों के नियंत्रक
९३४ ॐ कल्कि जन्म-मृत्यु निर्णयाय नमः - जन्म मृत्यु का निर्णय करने वाले
९३५ ॐ कल्कि कलि अंतिम संस्काराय नमः - कलियुग का अंतिम संस्कार करने वाले
९३६ ॐ कल्कि सतयुगावताराय नमः - सतयुग लाने वाले
९३७ ॐ कल्कि देव शक्ति-ग्रहणाय नमः - समस्त देवताओं की शक्तियाँ ग्रहण करने वाले
९३८ ॐ कल्कि शब्द-शक्ति प्रकाशाय नमः - शब्दशक्ति को प्रकाश देने वाले
९३९ ॐ कल्कि प्रकाशकाय नमः - जगत के प्रकाशक
९४० ॐ कल्कि भक्त-क्षमा-कराय नमः - भक्तों को क्षमा दान देने वाले
९४१ ॐ कल्कि कलि कंटक कर्तनाय नमः - कलि काल का काँटा निकालने वाले
९४२ ॐ कल्कि कलि-संकट-विनाशाय नमः - कलियुग के सभी संकट टालने वाले

९४३ ॐ कल्कि विश्व-दूरदर्शनाय नमः - विश्व की दूरी मापने वाले
९४४ ॐ कल्कि भक्त-सौविध्याय नमः - भक्तों को सभी सुविधा देने वाले
९४५ ॐ कल्कि ज्ञान-दुष्प्राप्याय नमः - केवल ज्ञान से नहीं मिलने वाले
९४६ ॐ कल्कि कलि प्रवेश निवारणाय नमः - कलि के प्रवेश को रोकने वाले
९४७ ॐ कल्कि कलि धमनी धमनाय नमः - कलियुग की एक एक नस को नष्ट कर जलाने वाले
९४८ ॐ कल्कि विराट-रूपाय नमः - अनन्त विराटरुपधारी
९४९ ॐ कल्कि इन्द्रप्रस्थासनाय नमः - इन्द्रप्रस्थ में अपना शासन स्थापित करने वाले
९५० ॐ कल्कि परिमार्जनाय नमः - जगत को शुद्ध करने वाले
९५१ ॐ कल्कि शुद्धि-करणाय नमः - सम्पूर्ण पृथ्वी को शुद्ध करने वाले
९५२ ॐ कल्कि स्पष्टी-करणाय नमः - स्पष्ट नीति बनाने वाले
९५३ ॐ कल्कि सत्य-धर्म-प्रकाशाय नमः - सत्य धर्म का प्रकाश करने वाले
९५४ ॐ कल्कि जगत् प्रकाशकाय नमः - जगत को प्रकाश देने वाले
९५५ ॐ कल्कि कलि तमोपहराय नमः - कलि के अंधकार का नाश करने वाले

१५६ ॐ कल्कि कलि पलायन निमित्ताय नमः - कलियुग को खदेड़ने वाले
१५७ ॐ कल्कि दशावतार शक्तये नमः - दस अवतारों की शक्ति को धारण करने वाले
१५८ ॐ कल्कि सर्वावतार स्वरूपाय नमः - सभी अवतारों को रूप देने वाले
१५९ ॐ कल्कि आत्मा ज्योतिषे नमः - अपने दिव्य तेज से आत्माओं को तेज प्रदान करने वाले
१६० ॐ कल्कि ध्वनि संक्रमणाय नमः - अपनी ध्वनि मात्र से सर्वत्र व्याप्त होने वाले
१६१ ॐ कल्कि कलि भयानकाय नमः - कलि को भारी भय देने वाले
१६२ ॐ कल्कि कलि भय प्रदाय नमः - कलियुग को भयभीत करने वाले
१६३ ॐ कल्कि धर्म-संविधानाय नमः - धर्म का संविधान बनाने वाले
१६४ ॐ कल्कि सर्व-समाधानाय नमः - सब का समाधान करने वाले
१६५ ॐ कल्कि कलि युगान्तकाय नमः - कलियुग का अंत करने वाले
१६६ ॐ कल्कि नूतन-सृष्टि-सर्जनाय नमः - नई सृष्टि बनाने वाले
१६७ ॐ कल्कि प्राच्य-संस्कृति-रक्षकाय नमः - प्राचीन संस्कृति के रक्षक
१६८ ॐ कल्कि हिन्दू-धर्म रक्षकाय नमः - हिन्दू धर्म की रक्षा करने वाले

१६९ ॐ कल्कि संस्कृत-जागरणाय नमः - संस्कृत भाषा का विकास करने वाले
१७० ॐ कल्कि संस्कृति-वर्धनाय नमः- वैदिक सनातन संस्कृति को बढ़ाने वाले
१७१ ॐ कल्कि धर्म-पताका-तोलनाय नमः - धर्म की ध्वजा चढ़ाने वाले
१७२ ॐ कल्कि भस्मीकृत कलि कालाय नमः - कलि काल की भस्म बिखेरने वाले
१७३ ॐ कल्कि विद्योत्तमाय नमः - विद्याओं में उत्तम विद्या देने वाले
१७४ ॐ कल्कि वेद-विद्या-प्रभावाय नमः - वेद विद्या का प्रभाव बढ़ाने वाले
१७५ ॐ कल्कि अविद्या-हराय नमः - अविद्या माया को हटाने वाले
१७६ ॐ कल्कि भक्त सर्वस्वाय नमः - भक्तों के सर्वस्व धन स्वरूप
१७७ ॐ कल्कि परमार्थाय नमः - परमार्थ जगाने वाले
१७८ ॐ कल्कि धर्मार्थाय नमः - धर्म के कार्यों की प्रेरणा देने वाले
१७९ ॐ कल्कि महा-काल-कवलाय नमः - महा मृत्यु का ग्रास करने वाले
१८० ॐ कल्कि भक्त वैभवाय नमः - भक्तों के धन स्वरूप
१८१ ॐ कल्कि ज्ञान निर्वहणाय नमः - ज्ञान के स्त्रोत स्वरूप
१८२ ॐ कल्कि भक्त हितावताराय नमः - भक्तों के लिये अवतार लेने वाले

९८३ ॐ कल्कि भक्तोत्सवाय नमः - भक्तों को उत्सव देने वाले
९८४ ॐ कल्कि अधर्म-समापनाय नमः - अधर्म की पूर्ण आहूति करने वाले
९८५ ॐ कल्कि अहो-रात्राय नमः - दिन-रात को जगाने वाले
९८६ ॐ कल्कि दिनमानाय नमः - विश्व के दिनमान को बनाने वाले
९८७ ॐ कल्कि भक्त सन्नि-कर्षाय नमः - भक्तों के पास रहने वाले
९८८ ॐ कल्कि काल रात्रिमानाय नमः - कालरात्रि का मापदण्ड देने वाले
९८९ ॐ कल्कि भक्त-प्रहलाद-नाय नमः - भक्तों को आनंद देने वाले
९९० ॐ कल्कि आनन्दनाय नमः - आनन्द को उत्पन्न करने वाले
९९१ ॐ कल्कि धनेश्वराय नमः - धनों के मालिक
९९२ ॐ कल्कि मनोरथ पूर्णाय नमः - मनोरथ पूर्ण करने वाले
९९३ ॐ कल्कि सर्वार्थ-सिद्धाय नमः - सब कामों को सिद्ध करने वाले
९९४ ॐ कल्कि निष्कण्टकाय नमः - सब काँटे निकालने वाले
९९५ ॐ कल्कि धर्मार्थ-वदनाय नमः - धर्ममय शरीर वाले
९९६ ॐ कल्कि महा सौख्याय नमः - सुखों के महासुख देने वाले

९९७ ॐ कल्कि महा-प्रभवाय नमः - महान प्रभाव वाले

९९८ ॐ कल्कि भक्त सुखदाय नमः - भक्तों के सुख दाता

९९९ ॐ कल्कि महा-कल्याणाय नमः - कल्याण स्वरूप

१००० ॐ कल्कि कलि दावाग्नि शमनाय नमः - कलि काल की आग बुझाने वाले

१००१ ॐ कल्कि अमृत गृह भय विदारिणे नमः - घर में अमृत की बरसा कर भय भगाने वाले

१००२ ॐ कल्कि ऋणन्तेश्वराय नमः - ऋण का अन्त करने वाले

श्री कल्कि के विभिन्न मंत्र

अपने परेशानी अथवा इच्छा के अनुसार किसी भी मंत्र की आहुति डाल सकते हैं।

१. जय कल्कि जय जगत्पते, पद्मापति जय रमापते।। (महामंत्र)

२. श्री कल्कि श्री कल्कि कल्कि, कल्कि कल्कि हरे हरे।।

३. ॐ नम सत्य श्री कल्कि भगवान

४. राम कहो कृष्ण कहो और कहो कल्कि
श्री कल्कि का नाम है धार गंगा जल की

५. गुरू जी करेंगे कल्कि जी करेंगे (डावांडोल)

६. श्री कल्कि कहना सदा हँसते रहना (तनाव)

७. करत करत तब चरण वन्दना बिगड़ी बनत गई
कल्कि जी मैंने तुम्हारी शरण लई
(असाध्य परिस्थितियों में, – सभी विषम परिस्थितियों में विशेष फलदायी)

८. मन मन्दिर में बैठकर तू झाड़ू रोज लगाया कर
श्री कल्कि श्री कल्कि कल्कि कल्कि के गुण गायाकर (ध्यान योग)

९. हक् अनीह् निष्कलंक गोरण्डाह, दुष्टा नाशनम पापहा (भय, कष्ट व रोग)

१०.ॐ नमः कल्कि फट् स्वाहा

हवन मंत्र

ॐ नम श्री कल्कि भगवते मलेच्छ दल हन्त्रे फट स्वाहा

श्री कल्कि गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भुव स्वः परमेष्ठिने युगावताराय निष्कलंकाय विद्महे,
धीमहि तन्नो कल्कि प्रचोदयात्।

बीज मंत्र

१. जय श्री कल्कि जय माता दी

२. ॐ क्रौं कल्कि देवाय नमः

३. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं आं कं कलकायै नमः

सकल जन्मार्जित पापं दूरि कुरु कुरु कं आं क्लीं ह्रीं ऐं ओम्

निम्न मंत्रों की एक अथवा ५ आहूतियाँ डाल सकते हैं।

१. ॐ गं (गंग) गणपत्ये स्वाहा

हे गणेश जी मेरे द्वारा डाली गई आहूति स्वीकार करें। मुझे प्रभु कल्कि का कार्य करना है। कृपा करके रिद्धि-सिद्धि शुभ-लाभ लक्ष्मी जी के साथ हमोर घर में विराजमान होकर मुझे और मेरे परिवार को हर संकट से बचाइये।

२. ॐ हूँ (हूम) हनुमते स्वाहा

प्रार्थना : जै जै हुनमान गोसाईं कृपा करहूँ गुरूदेव की नाई

मुझे भगवान श्री कल्कि के प्राकट्य हेतु, उनके विशिष्ट कार्य करने हैं। गुरु रुप में मेरा मार्गदर्शन करें और कलियुग की आसुरी शक्तियों के प्रहार से बचाएं।

मुझे बल, बुद्धि, विद्या देकर मेरे क्लेश विकार दूर करें।

३. ॐ ऐंम् (ऐं) ऊँ स्वाहा

हे सरस्वती माँ आप विद्या और ज्ञान की देवी हो। मुझे पढ़-लिखकर वैभवतापूर्वक सम्मानित जीवन जीते हुए प्रभु श्री कल्कि का कार्य करना है। माँ मुझ पर कृपा करो। मुझे सद्बुद्धि, विवेक प्रदान करो जिससे मैं कभी भी कोई बुरा काम ना करूँ। माँ मुझे तीव्र-बुद्धि एवं अच्छी स्मरण शक्ति प्रदान करें ताकि मैं हमेशा अपनी पढ़ाई में उत्तम सफलता प्राप्त करूँ। मुझे कल्कि जी का कार्य करना है।

४. ॐ दूं (दूंग) दुर्गाये स्वाहा (दुर्गाजी का मंत्र)

हे माँ हमेशा मेरे साथ रहकर मुझे कलियुग की बुरी शक्तियों के प्रहारों से बचाओ। अपनी कृपा से मुझे जीवन की हर परीक्षा में सफलता प्रदान करें। मुझे कल्कि जी का कार्य करना है।

५. ॐ नमो भैरवाय स्वाहा (भैरवजी का मंत्र)

६. ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्री श्री ॐ महालक्ष्मयै

स्वाहा (लक्ष्मी जी का मंत्र)

७. ॐ श्री योगमाया महालक्ष्मी नारायणी नमोस्तुते स्वाहा (योगमाया जी का मंत्र)

८. ॐ ऐं हीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा

९. ॐ ह्रौं जूँ सः ॐ भूभुर्व स्वः। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं। उर्वारुकमिव बन्धनांन्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। ॐ स्वः ॐ भुवः भूः ॐ सः जूँ ह्रौं ॐ । (महामृत्युंजय मंत्र)

१०.ओऽम भूभुर्वःस्व तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् - (गायत्री मंत्र)

इसके पश्चात् भगवान श्री कल्कि के हवन महामंत्र से निम्न क्रम में ॐ नमः श्री कल्कि भगवते म्लेच्छदल हन्त्रे फट् स्वाहा का सम्पुट लगाकर आहूति हवन कुंड में समर्पित (चढ़ाएं) करें -

१. श्री गुरु जी हनुमानजी महाराज की ओर से (५ बार)

२. महर्षि बालमुकुन्द जी महाराज की ओर से (१ बार)

३. ठाकुर रामकृष्ण परमहंस महाराज की ओर से (१ बार)

४. गुरुवर लक्ष्मी-नारायण की ओर से (५ बार)
५. गणेश जी की ओर से (१ बार)
६. माँ दुर्गा जी की ओर से (१ बार)
७. शिवजी और उनके परिवार की ओर से (१ बार)
८. माँ पदमा और माँ रमा की ओर से (१ बार)
९. गंगा माता और यमुनाजी की ओर से (१ बार)
१०. विश्वकर्माजी की ओर से (५ बार)
११. सभी देवी देवताओं की ओर से (१ बार)
१२. सभी तीर्थों की ओर से (१ बार)
१३. अपने भक्तों की दुर्गति और दुर्दशा नाश करने वाले कमलनयन श्री कल्कि भगवान की ओर से (१ बार)
१४. गौ और ब्राह्मण की ओर से (१ बार)
१५. हमारे समस्त पितृ-पित्रियों की ओर से (१ बार)
१६. हमारे समस्त परिवार की ओर से (१ बार)

१७.समस्त कल्कि भक्तों की ओर से (१ बार)
१८.जय कल्कि जय जगत्पते पदमापति जय रमपते जाप से (५ बार)

हवन कुण्ड के चारों कोनों में एक-एक बूंद घी टपकाकर बीच में घी की छोटी-सी धार के रूप में डालते हुए कहे ''यज्ञ महाराज की जय'' इसके बाद घी की धार के रुप में अन्तिम आहुति इस मंत्र के साथ डाले - ॐ अग्नेयै स्विष्टकृते स्वाहा, इदम् अग्नेयै स्विष्टकृते न मम्।

एक या दो बताशा हाथ में लेकर प्रार्थना करें - हे यज्ञ नारायण हवन में हमसे कोई भूल हुई हो तो हमें क्षमा करें। हमें यज्ञ का पूर्ण फल दिलवाएं हमें कल्कि जी का कार्य करना है।

फिर आसन के दाएं कोने को मोड़कर जल की कटोरी में थोड़ा-थोड़ा जल बीच की दो उंगलियों से लेकर तीन बार आसन के पास छिड़कें। तीनों बार ॐ श्री सकराय नमः बोलें। फिर तीसरी बार में उस छिड़के हुए जल का तीन उंगलियों से त्रिपुण्ड माथे के बीचों बीच लगाएं।

बन पड़े तो पूजा करते समय आसन के फुंदने दाएं और बाएं तरफ सीधे होने चाहिए इससे हवन एवं जाप का पूरा फल मिलता है।

प्रार्थना : हवन के शुरु में बोली गई प्रार्थना को पुनः दोहरा दें।

पितृदेव

पुरुष के लिए पितृ मातृ पक्ष और पिता पक्ष के होते है।

स्त्री के लिए पितृ ससुराल पक्ष और मायके पक्ष के होते है।

इसी तरह कुछ अतृप्त पितृ होते है जो हमसे अपना भाग चाहते हैं।

हवन में महामंत्र के आहुति के पहले कभी इस मंत्र की आहुति ॐ कल्कि पितामह-पितामहाय स्वाहा

१. पिता पक्ष के पितरों के लिए (५ बार)

२. माता पक्ष के पितरों के लिए (५ बार)

३. अतृप्त पितृ शक्तियों के लिए (१ बार)

इन आहुतियों से पितृ हर्षित रहते है और पितृ दोष भी दूर होता है।